नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 102
दि. 13.01.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

देश के सबसे स्वच्छ शहर पर संकट की छाया इंदौर में दूषित पानी ने मचाया मौत का तांडव

(जीएनएस)। इंदौर। स्वच्छता के राष्ट्रीय मानचित्र पर वर्षों से अव्वल रहने वाला इंदौर इन दिनों एक गहरे मानवीय संकट से जूझ रहा है। जिस शहर की पहचान साफ-सफाई, बेहतर जीवन स्तर और नागरिक सुविधाओं से होती रही है, वहीं अब वही शहर जहरीले पानी के कारण लोगों की जान बचाने के बजाय जान लेने के आरोपों से घिर गया है। भागीरथपुरा इलाके में दूषित पेयजल के सेवन से फैली बीमारी ने अब तक 23 लोगों की जान ले ली है और दर्जनों लोग अस्पतालों में जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहे हैं। यह त्रासदी न केवल प्रशासनिक तंत्र पर सवाल खड़े कर रही है, बल्कि शहरी विकास और बुनियादी सुविधाओं के दावों की भी कठोर परीक्षा ले रही है।

सोमवार को इस भयावह सिलसिले में एक और नाम जुड़ गया। 64 वर्षीय भगवानदास भरणे की इलाज के दौरान मौत हो गई, जो पिछले करीब दस दिनों से अस्पताल में भर्ती थे। परिजनों के अनुसार, भागीरथपुरा में सप्लाई हो रहे पानी को पीने के बाद उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई थी। शुरुआत में उल्टी-दस्त और संक्रमण के लक्षण दिखाई दिए, जिन्हें सामान्य समझकर निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। लेकिन हालत लगातार बिगड़ती चली गई और उन्हें बॉम्बे अस्पताल रेफर करना पड़ा। अस्पताल प्रशासन के मुताबिक, भर्ती के वक्त उन्हें कार्डियक अरेस्ट आया था, जिसके बाद सीपीआर देकर वेंटिलेटर पर रखा गया। डॉक्टरों ने बताया कि गैंग्रीन और मल्टी ऑर्गन फेल्योर जैसी गंभीर जटिलताओं ने उनकी जान ले ली।

भागीरथपुरा की यह त्रासदी दिसंबर के अंतिम सप्ताह में सामने आई थी, जब

इलाके में अचानक बड़ी संख्या में लोगों को उल्टी-दस्त, तेज बुखार और संक्रमण की शिकायतें होने लगीं। 15 दिसंबर के बाद मामलों में तेजी से इजाफा हुआ और देखते ही देखते स्थिति बेकाबू हो गई। शुरुआती दिनों में कई मरीजों को एमवाय अस्पताल और निजी अस्पतालों में भर्ती कराया गया। धीरे-धीरे यह स्पष्ट होने लगा कि समस्या की जड़ दूषित पेयजल है। पाइपलाइन में गंदे नालों का पानी मिल जाने और लंबे समय से रखरखाव न होने की आशंका जताई गई, हालांकि प्रशासनिक स्तर पर इसकी स्पष्ट जिम्मेदारी अब तक तय नहीं हो सकी है। मृतकों की सूची में महिलाएं, बुजुर्ग और एक महज पांच माह का शिशु भी शामिल है, जिसने इस आपदा को और भी भयावह बना दिया है। बीते दिनों 59 वर्षीय कमला बाई की मौत ने प्रशासनिक संवेदनशीलता पर गंभीर सवाल खड़े किए। परिजनों का आरोप है कि पता विवाद और दस्तावेजी खामियों के कारण उनकी मौत को आधिकारिक रूप से दूषित पानी से जोड़कर दर्ज नहीं किया गया, जबकि लक्षण और परिस्थितियां अन्य पीड़ितों जैसी ही थीं। इस घटनाक्रम ने इलाके में आक्रोश और असुरक्षा की भावना को और गहरा कर दिया है।

वर्तमान हालात बेहद चिंताजनक बने हुए हैं। अलग-अलग अस्पतालों में अब भी 42 मरीज भर्ती हैं, जिनमें से 13 की हालत गंभीर बताई जा रही है। तीन मरीज वेंटिलेटर पर हैं और आईसीयू में डॉक्टरों की कड़ी निगरानी में उनका इलाज चल रहा है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का कहना है कि स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है और मरीजों को हर संभव चिकित्सकीय सहायता दी जा रही है, लेकिन स्थानीय लोगों में डर और अविश्वास का माहौल बना हुआ है।

नगर निगम ने एहतियातन क्षेत्र में नियमित जलापूर्ति बंद कर दी है। भागीरथपुरा और आसपास के इलाकों में लोग अब टैंकरों के सहारे जीवन यापन कर रहे हैं। पीने और खाना बनाने के लिए लोग या तो बोतलबंद पानी खरीद रहे हैं या आरओ और बोरिंग के पानी को उबालकर इस्तेमाल कर रहे हैं। आम लोगों का कहना है कि हर दिन पानी के लिए जद्दोजहद करनी पड़ रही है और यह स्थिति कब तक चलेगी, इसका कोई स्पष्ट जवाब प्रशासन के पास नहीं है।

स्वास्थ्य विभाग और नगर निगम द्वारा रोजाना पानी की सैंपलिंग और लैब टेस्टिंग की जा रही है। अधिकारियों का दावा है कि पाइपलाइन की सफाई, मरम्मत और क्लोरीनेशन जैसे सुधार कार्य तेजी से किए जा रहे हैं, ताकि जल्द से जल्द सुरक्षित जलापूर्ति बहाल की जा सके। लेकिन सवाल यह है कि जब तक स्थिति पूरी तरह सामान्य नहीं होती, तब तक जिम्मेदारी कौन लेगा उन परिवारों की, जिन्होंने अपनों को खो दिया है।

यह पूरा घटनाक्रम इंदौर जैसे बड़े और विकसित शहर में बुनियादी सुविधाओं की वास्तविक स्थिति पर गंभीर बहस छेड़ता है। स्वच्छता रैंकिंग और पुरस्कारों के पीछे छिपी सच्चाई यह है कि अगर पीने का पानी ही सुरक्षित नहीं है, तो विकास के तमाम दावे खोखले नजर आते हैं। भागीरथपुरा की गलियों में पसरा सन्नाटा, अस्पतालों के बाहर रोते-बिलखते परिजन और टैंकरों के पीछे लगी लंबी कतारें इस बात की गवाही दे रही हैं कि यह सिर्फ एक तकनीकी चूक नहीं, बल्कि एक मानवीय त्रासदी है।

देश के सबसे स्वच्छ शहर की पहचान रखने वाले इंदौर के लिए यह संकट चेतावनी भी है और चुनौती भी। चेतावनी इसलिए कि बुनियादी सुविधाओं में थोड़ी सी लापरवाही भी कितनी भारी पड़ सकती है, और चुनौती इसलिए कि प्रशासन को अब सिर्फ हालात संभालने नहीं, बल्कि भरोसा बहाल करने की भी जरूरत है। जब तक हर घर तक सुरक्षित पानी नहीं पहुंचता और पीड़ित परिवारों को न्याय व मुआवजा नहीं मिलता, तब तक इंदौर की यह त्रासदी सिर्फ आंकड़ों की कहानी बनकर नहीं रह सकती।

फायर एंड फॉरगेट की अचूक ताकत, स्वदेशी मिसाइल ने दौड़ते टैंक को पल भर में किया तबाह

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत की सैन्य शक्ति और स्वदेशी रक्षा तकनीक को नई ऊंचाई देने वाली एक बड़ी उपलब्धि सामने आई है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित तीसरी पीढ़ी की 'फायर एंड फॉरगेट' तकनीक से लैस मैन पोर्टेबल एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल ने हालिया उड़ान परीक्षण में अपनी घातक क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया है। महाराष्ट्र के अहिल्या नगर स्थित केके रेंज में किए गए इस परीक्षण के दौरान मिसाइल ने तेज गति से आगे बढ़ रहे एक डमी टैंक को पूरी सटीकता के साथ निशाना बनाकर पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। इस सफल परीक्षण को भारतीय सेना के लिए एक निर्णायक उपलब्धि माना जा रहा है, क्योंकि इसके साथ ही सेना को जल्द ही एक अत्याधुनिक, स्वदेशी और भरोसेमंद तीसरी पीढ़ी का एंटी-टैंक हथियार मिलने का रास्ता साफ हो गया है। डीआरडीओ के अनुसार, यह परीक्षण न केवल तकनीकी दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा, बल्कि परिचालन मानकों के लिहाज से भी पूरी तरह सफल साबित हुआ। मिसाइल ने उड़ान के दौरान अपने सभी निर्धारित मानकों

पर खरा उतरते हुए लक्ष्य को पहचानने, उसे लॉक करने और फिर सटीक प्रहार करने की प्रक्रिया को बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के पूरा किया। 'फायर एंड फॉरगेट' तकनीक का सबसे बड़ा लाभ यही है कि एक बार मिसाइल दागे जाने के बाद ऑपरेटर को लक्ष्य को ट्रैक करने या मार्गदर्शन देने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे युद्धक्षेत्र में सैनिकों की सुरक्षा और प्रभावशीलता दोनों बढ़ जाती हैं।

इस परीक्षण में जिस गतिशील लक्ष्य का उपयोग किया गया, वह आधुनिक मुख्य युद्धक टैंक की नकल करने वाला एक विशेष थर्मल टारगेट सिस्टम था, जिसे डिफेंस लैबोरेटरी, जोधपुर ने डिजाइन किया था। मिसाइल का इमेजिंग इंफ्रारेड होमिंग सीकर लक्ष्य की ऊष्मा पहचान कर उसे लॉक करता है, जिससे दिन और रात, दोनों परिस्थितियों में सटीक हमला संभव हो पाता है। डीआरडीओ ने स्पष्ट किया कि यह तकनीक खराब मौसम और सीमित दृश्यता जैसी परिस्थितियों में भी प्रभावी ढंग से काम करने में सक्षम है, जो इसे आधुनिक युद्ध की जरूरतों के अनुरूप बनाती है। एमपीएटीजीएम को पूरी तरह स्वदेशी तकनीकों से विकसित किया गया है। इसमें ऑल-इलेक्ट्रिक कंट्रोल एक्टुएशन सिस्टम, उन्नत फायर कंट्रोल सिस्टम, टैंडम वारहेड और उच्च क्षमता वाली प्रणोदन प्रणाली जैसी अत्याधुनिक विशेषताएं शामिल हैं। टैंडम वारहेड की खासियत यह है कि यह आधुनिक टैंकों पर लगे रिएक्टिव आर्मर को भेदने में सक्षम होता है, जिससे भारी सुरक्षा से लैस दुश्मन टैंक भी इससे बच नहीं पाते। मिसाइल की डिजाइनिंग और विकास में डीआरडीओ की कई प्रमुख प्रयोगशालाओं—हैदराबाद स्थित रिसर्च सेंटर इमारत, चंडीगढ़ की टर्मिनल बैलिस्टिक्स रिसर्च लेबोरेटरी, पुणे की उच्च ऊर्जा सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला और देहरादून की इंस्ट्रूमेंट्स रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टैब्लिशमेंट—का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। तकनीकी रूप से यह मिसाइल भारतीय सेना की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। इसकी अधिकतम मारक दूरी लगभग 2.5 किलोमीटर है, जो इसे नजदीकी और मध्यम दूरी की टैंक रोधी लड़ाई के लिए बेहद प्रभावी बनाती है। मिसाइल की लंबाई करीब 1,300 मिलीमीटर है और इसका वजन लगभग 14.5 किलोग्राम रखा गया है, ताकि इसे पैदल सैनिक आसानी से ले जा सकें। इसकी लॉन्च ट्यूब एल्यूमीनियम और कार्बन फाइबर से बनी है, जिससे वजन कम होने के साथ-साथ मजबूती भी बनी रहती है। कमांड लॉन्च यूनिट का वजन करीब 14.25 किलोग्राम है और यह एक ऑल-वेदर डिजिटल सिस्टम से लैस है, जिससे अलग-अलग परिस्थितियों में इसका संचालन आसान हो जाता है।

करूर भगदड़ प्रकरण में अभिनेता विजय से सीबीआई की गहन पूछताछ, दिल्ली में जांच एजेंसी के समक्ष हुए पेश

(जीएनएस)। नई दिल्ली। तमिलनाडु के करूर जिले में हुए भीषण भगदड़ कांड की जांच अब निर्णायक मोड़ पर पहुंचती नजर आ रही है। तमिलगा वेट्री कजगम (टीवीके) के अध्यक्ष और दक्षिण भारतीय सिनेमा के चर्चित अभिनेता विजय सोमवार को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो के समक्ष पेश हुए और मामले से जुड़े सवालों के जवाब दिए। दिल्ली स्थित सीबीआई मुख्यालय में हुई इस पूछताछ को बेहद अहम माना जा रहा है, क्योंकि यह भगदड़ एक राजनीतिक कार्यक्रम के दौरान हुई थी और इसमें बड़ी संख्या में लोगों की जान चली गई थी। जांच एजेंसी अब इस पूरे घटनाक्रम की परत-दर-परत पड़ताल कर रही है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि इस त्रासदी के लिए जिम्मेदारी किस स्तर पर तय होती है। सीबीआई मुख्यालय के बाहर सोमवार सुबह से ही माहौल गर्म रहा। अभिनेता विजय के समर्थकों और टीवीके कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ वहां जुटी रही। हाथों में पार्टी के झंडे लिए समर्थक अपने नेता के समर्थन में नारेबाजी करते दिखाई दिए। स्थिति को देखते हुए दिल्ली पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों ने इलाके में अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था की थी, ताकि किसी तरह की अव्यवस्था न हो। हालांकि, सुरक्षा घेरा कड़ा होने के कारण समर्थकों को मुख्यालय से दूरी पर ही रोका गया और पूछताछ शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। यह पूरा मामला 27 सितंबर 2025 का है, जब तमिलनाडु के करूर जिले में टीवीके द्वारा आयोजित एक बड़े चुनावी कार्यक्रम के दौरान अचानक भगदड़ मच गई थी। कार्यक्रम में भारी संख्या में लोग जुटे थे और प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, अव्यवस्थित भीड़ प्रबंधन, पर्याप्त सुरक्षा इंतजामों की कमी और अचानक हुई अफरा-तफरी के कारण हालात बेकाबू हो गए। इस दर्दनाक हादसे में 41 लोगों की मौके पर या बाद में इलाज के दौरान मौत हो गई थी, जबकि कई अन्य गंभीर रूप से घायल हुए थे। इस घटना ने पूरे राज्य को झकझोर कर रख दिया था और राजनीतिक हलकों में भी तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आई थीं। शुरुआत में मामले की जांच राज्य पुलिस कर रही थी, लेकिन मृतकों की संख्या, घटना की गंभीरता और राजनीतिक संवेदनशीलता को देखते हुए बाद में जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो को सौंप दी गई। सीबीआई ने मामला अपने हाथ में लेने के बाद आयोजकों, प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस व्यवस्था और कार्यक्रम से जुड़े तमाम पहलुओं की जांच शुरू की। इसी क्रम में अभिनेता विजय को भी नोटिस जारी किया गया था। सूत्रों के मुताबिक, उन्हें भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 179 के तहत तलब किया गया, जो किसी व्यक्ति को जांच में सहयोग के लिए उपस्थित होने का कानूनी प्रावधान देता है।

सीबीआई सूत्रों का कहना है कि पूछताछ के दौरान विजय से कार्यक्रम के आयोजन, भीड़ जुटाने की योजना, सुरक्षा इंतजामों, स्थानीय प्रशासन से समन्वय और आयोजन से पहले किए गए आकलन से जुड़े सवाल पूछे गए। एजेंसी यह जानने की कोशिश कर रही है कि क्या कार्यक्रम के लिए आवश्यक अनुमति और सुरक्षा मानकों का पालन किया गया था या नहीं, और यदि कहीं चूक हुई तो उसकी जिम्मेदारी किस पर आती है। हालांकि, आधिकारिक तौर पर पूछताछ के विवरण को लेकर एजेंसी ने कोई बयान जारी नहीं किया है।

अभिनेता विजय की इस पेशी को राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हाल के वर्षों में उन्होंने सक्रिय राजनीति में कदम रखा है और टीवीके के जरिए तमिलनाडु की राजनीति में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश की है। करूर भगदड़ की घटना ने उनके राजनीतिक सफर पर भी सवाल खड़े कर दिए थे। विपक्षी दलों ने इस हादसे को लेकर आयोजकों की जिम्मेदारी तय करने की मांग की थी, जबकि विजय और उनकी पार्टी ने घटना पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना जताई थी और हर संभव सहायता का भरोसा दिलाया था।

इस प्रकरण में मृतकों के परिजनों की निगाहें भी सीबीआई की जांच पर टिकी हैं। कई परिवारों ने आरोप लगाया है कि कार्यक्रम के दौरान भीड़ को नियंत्रित करने के लिए न तो पर्याप्त पुलिस बल तैनात था और न ही आपात स्थिति से निपटने के लिए ठोस इंतजाम किए गए थे। उनका कहना है कि यदि आयोजन से पहले उचित योजना और सुरक्षा प्रबंध किए गए होते, तो इतनी बड़ी जनहानि से बचा जा सकता था। पीड़ित परिवार लगातार यह मांग कर रहे हैं कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। सीबीआई की जांच अब निर्णायक चरण में मानी जा रही है। एजेंसी पहले ही कई आयोजकों, स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों और पुलिस कर्मियों से पूछताछ कर चुकी है। अभिनेता विजय से पूछताछ इसी कड़ी का हिस्सा है। माना जा रहा है कि जांच पूरी होने के बाद सीबीआई अपनी रिपोर्ट अदालत के समक्ष पेश करेगी, जिसके आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई तय होगी।

कश्मीर की वादियों में जमा देने वाली सर्दी का असर, शून्य से नीचे तापमान ने बढ़ाई मुश्किलें

(जीएनएस)। श्रीनगर। कश्मीर घाटी इन दिनों कड़ाके की ठंड की चपेट में है और जनजीवन पर इसका सीधा असर साफ तौर पर देखा जा रहा है। सोमवार को न्यूनतम तापमान में भले ही हल्का सा सुधार दर्ज किया गया हो, लेकिन इसके बावजूद पारा शून्य के पार नहीं जा सका। राजधानी श्रीनगर में रात का न्यूनतम तापमान शून्य से 2.4 डिग्री सेल्सियस नीचे रिकॉर्ड किया गया, जिससे सुबह के समय सड़कों, पेड़ों और छतों पर जमी बर्फ की परतें आम नजारा बनी रहीं। घाटी के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल गुलमर्ग और पहलगाम में हालात और भी सख्त रहे, जहां न्यूनतम तापमान शून्य से 3.4 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया।

लगातार बनी इस ठंड ने आम लोगों की दिनचर्या को प्रभावित कर दिया है। सुबह और शाम के समय गलन इतनी तेज होती है कि लोग अनावश्यक रूप से घरों से बाहर निकलने से बच रहे हैं। नदियों और जलाशयों के किनारों पर बर्फ जमने लगी है, जबकि कई इलाकों में पाइपलाइन और पानी की आपूर्ति से जुड़ी समस्याएं भी सामने आ रही हैं। श्रीनगर सहित घाटी के अन्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अलाव, हीटर और पारंपरिक अंगीठियों का सहारा लेने को मजबूर हैं। ठंड के कारण बाजारों में भी चहल-पहल कम देखी जा रही है और दुकानें अपेक्षाकृत देर से खुल रही हैं।

मौसम विभाग के अनुसार, फिलहाल कश्मीर घाटी में मौसम आमतौर पर शुष्क बना रहेगा, हालांकि आसमान में कभी-कभार बादल छाए रह सकते हैं। विभाग ने संकेत दिए हैं कि ऊंचाई वाले इलाकों में कहीं-कहीं हल्की बारिश या बर्फबारी हो सकती है, लेकिन किसी बड़े पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने के संकेत अभी नहीं हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि शुष्क मौसम के बावजूद ठंडी हवाओं और साफ आसमान के कारण रात के समय तापमान में तेज गिरावट हो रही है, जिससे ठंड का असर और ज्यादा महसूस किया जा रहा है। श्मीर में सर्दियों का यह दौर 'चिल्लई कलां' के बाद भी जारी है, जो यहां की सबसे कठोर सर्दी का समय माना जाता है। हालांकि चिल्लई कलां के खत्म होने के बाद आमतौर पर लोगों को कुछ राहत की उम्मीद रहती है, लेकिन इस बार ठंड का असर अब भी बना हुआ है। मौसम विभाग का कहना है कि अगले कुछ दिनों में न्यूनतम तापमान में धीरे-धीरे बढ़ोतरी हो सकती है, लेकिन यह राहत सीमित होगी और 25 जनवरी तक घाटी में ठंडे और शुष्क मौसम का असर जारी रह सकता है।

इस कड़ाके की ठंड का असर पर्यटन गतिविधियों पर भी देखा जा रहा है। गुलमर्ग, पहलगाम और सोनमर्ग जैसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की आवाजाही जारी है, लेकिन बेहद कम तापमान के चलते प्रशासन और स्थानीय लोग अतिरिक्त सतर्कता बरत रहे हैं। बर्फ से ढकी ढलानों पर स्कीइंग और अन्य शीतकालीन खेलों के लिए पर्यटकों में उत्साह जरूर है, लेकिन मौसम की कठोरता को देखते हुए सुरक्षा इंतजामों को भी कड़ा किया गया है। कई इलाकों में सड़कों पर फिसलन बढ़ गई है, जिससे वाहन चालकों को विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी जा रही है।

ग्रामीण इलाकों में हालात और चुनौतीपूर्ण बने हुए हैं। दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोग ईंधन, लकड़ी और राशन का पर्याप्त भंडारण पहले से कर रहे हैं ताकि ठंड के सबसे कठिन दिनों में किसी तरह की दिक्कत न हो। पशुपालकों के लिए भी यह समय कठिन होता है, क्योंकि पशुओं को ठंड से बचाने के लिए अतिरिक्त इंतजाम करने पड़ते हैं। कई जगहों पर पशुओं के लिए अस्थायी शेड और गर्म व्यवस्था की गई है ताकि उन्हें ठंड से बचाया जा सके।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह की भीषण ठंड में बुजुर्गों, बच्चों और पहले से बीमार लोगों को विशेष सावधानी बरतने की जरूरत होती है।

सीमा पार नशे के कारोबार पर करारा प्रहार, तेंगनौपाल में करोड़ों की याबा के साथ तीन तस्कर दबोचे गए

(जीएनएस)। तेंगनौपाल। मणिपुर के संवेदनशील और सीमावर्ती तेंगनौपाल जिले में सुरक्षा बलों ने मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ एक बड़ी और निर्णायक कार्रवाई को अंजाम देते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित नशीली दवा 'याबा' की भारी खेप बरामद की है। इस कार्रवाई में तीन तस्करों को गिरफ्तार किया गया है, जिनके कब्जे से करीब 5.89 किलोग्राम याबा गोलियां मिली हैं। अधिकारियों के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय बाजार में इस नशीले पदार्थ की कीमत एक करोड़ रुपये से भी अधिक आंकी जा रही है। इस सफलता को पूर्वोत्तर भारत में सक्रिय नशा तस्करी नेटवर्क के खिलाफ एक बड़ी कामयाबी माना जा रहा है। पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों से मिली जानकारी के अनुसार, यह कार्रवाई खुफिया सूचना के आधार पर की गई। लंबे समय से तेंगनौपाल और आसपास के इलाकों में संदिग्ध गतिविधियों की निगरानी की जा रही थी। सूचना मिली थी कि सीमावर्ती मार्गों के जरिए बड़ी मात्रा में प्रतिबंधित मादक पदार्थ की खेप को एक वाहन के माध्यम से अंदरूनी इलाकों तक पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। इसी इनपुट के आधार पर सुरक्षा बलों ने एक चेकपोस्ट पर विशेष निगरानी शुरू की और संदिग्ध वाहन को रोका गया।

वाहन की तलाशी के दौरान सुरक्षा बलों को बड़ी मात्रा में याबा गोलियां बरामद हुईं, जिन्हें बेहद चालाकी से छिपाकर ले जाया जा रहा था। मौके पर ही तीनों आरोपितों को हिरासत में ले लिया गया। गिरफ्तार किए गए तस्करों की पहचान जेम्स बैटे, हटनेइकिम बैटे और डेविड टी. मेट के रूप में हुई है। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया है कि ये आरोपी लंबे समय से नशा तस्करी के नेटवर्क से जुड़े हुए थे और सीमावर्ती इलाकों का फायदा उठाकर प्रतिबंधित मादक पदार्थों की आवाजाही में शामिल थे। याबा, जिसे आम भाषा में 'मैडनेस ड्रग' भी कहा जाता है, मेथामफेटामाइन और कैफीन के मिश्रण से तैयार की जाती है और इसे बेहद खतरनाक नशीला पदार्थ माना जाता है। पूर्वोत्तर राज्यों के जरिए इसकी तस्करी की कोशिशें लगातार सामने आती रही हैं, क्योंकि यह क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के नजदीक है और कुछ दुर्गम इलाकों में निगरानी चुनौतीपूर्ण हो जाती है। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि इस बरामदगी के तार सीमा पार सक्रिय संगठित गिरोहों से भी जुड़े हो सकते हैं।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि इस खेप के स्रोत और इसके अंतिम गंतव्य को लेकर गहन जांच शुरू कर दी गई है। यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि याबा की यह खेप किस देश या क्षेत्र से लाई गई थी और इसे किन-किन स्थानों तक पहुंचाया जाना था। इसके साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि इस नेटवर्क में और कौन-कौन लोग शामिल हैं और क्या इसका संबंध किसी बड़े अंतरराष्ट्रीय तस्करी सिंडिकेट से है। इस कार्रवाई को लेकर सुरक्षा बलों ने यह भी स्पष्ट किया कि मणिपुर और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में नशा तस्करी के खिलाफ अभियान को और तेज किया जाएगा। सीमावर्ती इलाकों में चेकपोस्ट की निगरानी बढ़ाई जा रही है और खुफिया तंत्र को और मजबूत किया गया है ताकि ऐसी गतिविधियों को शुरुआती स्तर पर ही रोका जा सके। अधिकारियों का कहना है कि नशीले पदार्थों की तस्करी न केवल युवाओं के भविष्य के लिए घातक है, बल्कि यह संगठित अपराध और सीमा पार अवैध गतिविधियों को भी बढ़ावा देती है।

स्थानीय लोगों और सामाजिक संगठनों ने भी इस कार्रवाई की सराहना की है। उनका कहना है कि याबा जैसे खतरनाक नशीले पदार्थों की बढ़ती उपलब्धता ने समाज, विशेषकर युवाओं के बीच गंभीर समस्याएं पैदा की हैं।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

दमन से समाज में असंतोष गहरा होगा

ईरान एक बार फिर इतिहास के ऐसे मोड़ पर खड़ा दिखाई देता है, जहां सड़कों पर उमड़ा जनाक्रोश केवल किसी एक घटना की प्रतिक्रिया नहीं रह गया है, बल्कि यह वर्षों से संचित असंतोष, दमन और अधूरी आकांक्षाओं की सामूहिक अभिव्यक्ति बन चुका है। दशकों से चला आ रहा कट्टरपंथी धार्मिक शासन समय-समय पर उठने वाली विरोध की आवाजों को ताकत के बल पर दबाता रहा है, लेकिन मौजूदा विरोध अपने स्वरूप, विस्तार और सामाजिक आधार के कारण पिछले एक दशक में सबसे तीव्र और चुनौतीपूर्ण माना जा रहा है। प्रदर्शनकारियों पर कठोर कार्रवाई, मृत्युदंड की धमकियां और उन्हें 'ईश्वर का शत्रु' घोषित करने जैसे कदम यह संकेत देते हैं कि सत्ता संवाद के रास्ते से हटकर भय और दमन के सहारे नियंत्रण बनाए रखना चाहती है। सवाल यह है कि क्या यह रणनीति लंबे समय तक कारगर साबित हो पाएगी या फिर यह आक्रोश किसी बड़े बदलाव की भूमिका तैयार कर रहा है। इतिहास गवाह है कि जब भी किसी शासन ने व्यापक जनभावनाओं को बलपूर्वक दबाने की कोशिश की है, तो वह असंतोष भीतर-ही-भीतर और अधिक तीव्र होता चला गया है। सतह पर भले ही शांति दिखाई दे, लेकिन समाज के भीतर सुलगता असंतोष अवसर मिलते ही कहीं अधिक वेग के साथ उभर आता है। ईरान की मौजूदा स्थिति भी कुछ ऐसी ही प्रतीत होती है। यहां का संकट केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और वैचारिक भी है। यह एक ऐसे समाज और सत्ता के बीच टकराव है, जिनकी सोच और दिशा अब एक-दूसरे से मेल नहीं खा रही हैं। एक ओर कठोर धार्मिक ढांचे में बंधी सत्ता है, जो व्यक्तिगत जीवन से लेकर सार्वजनिक आचरण तक को नियंत्रित करना चाहती है, वहीं दूसरी ओर एक युवा, शिक्षित और वैश्विक प्रभावों से जुड़ा समाज है, जो खुलेपन, स्वतंत्रता और सम्मानजनक जीवन की आकांक्षा रखता है। ईरान की जनसंख्या संरचना इस संघर्ष को और गहरा बनाती है। देश की बड़ी आबादी युवा है, जिसने इंटरनेट, सोशल मीडिया और अंतरराष्ट्रीय संपर्कों के माध्यम से दुनिया के अन्य हिस्सों में हो रहे सामाजिक बदलावों और विकास के मॉडल देखे हैं। वे मध्य-पूर्व के कई देशों में हो रहे आर्थिक और सामाजिक सुधारों से भी परिचित हैं। ऐसे में स्वाभाविक है कि वे अपने देश में भी बेहतर अवसर, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गरिमामय जीवन की अपेक्षा करें। लेकिन जब इन आकांक्षाओं का सामना कठोर नियमों, सामाजिक नियंत्रण और अभिव्यक्ति की सीमाओं से होता है, तो असंतोष जन्म लेता है। यही असंतोष आज सड़कों पर दिखाई दे रहा है।

इस जनाक्रोश के पीछे आर्थिक कारण भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। ईरान लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों का सामना कर रहा है, जिनका मुख्य कारण उसकी परमाणु नीति और पश्चिमी देशों के साथ तनावपूर्ण संबंध रहे हैं। इन प्रतिबंधों ने ईरानी अर्थव्यवस्था को गहरी चोट पहुंचाई है। मुद्रा अवमूल्यन, बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी और रोजमर्रा की जरूरतों की वस्तुओं की कमी ने आम लोगों की जिंदगी कठिन बना दी है। जब आर्थिक दबाव लगातार बढ़ता है और भविष्य के प्रति अनिश्चितता गहराती है, तो समाज में असंतोष फैलना तय हो जाता है। आम नागरिकों को यह महसूस होने लगता है कि वे नीतिगत फैसलों की कीमत चुका रहे हैं, जिनमें उनकी कोई भागीदारी नहीं है। शासन की प्रतिक्रिया इस संकट को और जटिल बनाती दिखाई देती है। संवाद और सुधार के बजाय दमन का रास्ता अपनाने से अस्थायी शांति तो स्थापित की जा सकती है, लेकिन इससे सत्ता की वैधता कमजोर होती जाती है। आधुनिक विश्व में किसी भी शासन की स्थिरता केवल शक्ति पर नहीं, बल्कि जनता की स्वीकृति और विश्वास पर टिकी होती है। जब जनता की आवाज को सुने बिना उसे दबाने का प्रयास किया जाता है, तो शासन और समाज के बीच अविश्वास की खाई और चौड़ी हो जाती है। ईरान में भी यही स्थिति बन रही है, जहां सत्ता की कठोरता ने युवा वर्ग और आम जनता को और अधिक अलग-थलग महसूस कराया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ईरान की स्थिति विरोधाभासों से भरी है। पश्चिमी देश, विशेष रूप से अमेरिका, ईरान की आंतरिक नीतियों और मानवाधिकारों के मुद्दों पर लगातार आलोचना करते रहे हैं। लेकिन यह आलोचना अक्सर लोकतांत्रिक मूल्यों से अधिक भू-राजनीतिक हितों से प्रेरित मानी जाती है। प्रतिबंधों और कूटनीतिक दबावों का उद्देश्य भले ही शासन को झुकाना रहा हो, लेकिन व्यवहार में इनका सबसे बड़ा बोझ आम जनता पर पड़ा है। वर्षों के अनुभव यह बताते हैं कि प्रतिबंधों से शायद ही कभी सत्ता संरचना में मूलभूत बदलाव आता है, जबकि समाज के निचले और मध्य वर्ग की परेशानियां कई गुना बढ़ जाती हैं।

स्मरण शक्ति और एकाग्रता भी बढ़ती है नमस्कार से

> भारत के अलावा कई देशों में भी नमस्कार की मुद्रा को अत्यंत प्रभावशाली और चमत्कारी माना जाता है। जापानी भाषा में इसे 'गाशो' कहा जाता है। भारत समेत कई देशों का यही मानना है कि हाथ जोड़ना केवल एक शारीरिक मुद्रा नहीं, बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक मनोस्थिति को भी दर्शाता है।

भारतीय दर्शन के अनुसार, हमारे हाथ ऊर्जा के उत्सर्जन केंद्र हैं। जब नमस्कार की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़े जाते हैं तो मन को असीम शांति मिलती है। प्रार्थना के लिए दोनों हाथों को जोड़ा जाता है। भारत के अलावा कई देशों में भी नमस्कार की मुद्रा को अत्यंत प्रभावशाली और चमत्कारी माना जाता है। जापानी भाषा में इसे 'गाशो' कहा जाता है। भारत समेत कई देशों का यही मानना है कि हाथ जोड़ना केवल एक शारीरिक मुद्रा नहीं है, बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक मनोस्थिति को दर्शाता है। जब हम हाथ जोड़ते हैं तो हमारी अंगुलियों के सिरे एक-दूसरे पर दबाव डालते हैं। ये प्रेशर प्वाइंट्स हमारे मस्तिष्क के उन हिस्सों से जुड़े होते हैं जो स्मरण शक्ति और एकाग्रता के लिए जिम्मेदार होते हैं। वहीं जापान में 'गाशो' के माध्यम से यह बताया जाता है कि जब दाएं और बाएं हाथ आपस में मिलते हैं, तो ये दो विपरीत चीजों के मिलन के प्रतीक होते हैं जैसे स्वयं और दूसरा, प्रकाश और अंधकार। इनसे यह पता चलता है कि ब्रह्मांड में सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है और हम अलग-अलग नहीं हैं। गाशो की मुद्रा में व्यक्ति का मन भटकना बंद कर देता है। मन एक ही स्थान पर केंद्रित हो जाता है। इसलिए अक्सर स्कूल में बच्चों को पढ़ाने से पहले दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना कराई जाती है। हमारे देश में जब कोई महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ किया जाता है तो पहले दोनों हाथ जोड़कर ईश्वर का स्मरण किया जाता है। ऐसा करने से मस्तिष्क की ऊर्जा एकाग्र हो जाती है और जिस कार्य को किया जाने वाला है, उसे बल मिलता है। हाथ जोड़ने का सही तरीका यह है कि दोनों हथेलियों को अपने हृदय चक्र के पास सटाकर रखना चाहिए। ऐसा करने से हृदय सकारात्मक होता है। हृदय को यह अहसास होता है कि नकारात्मक बिंदुओं को बाहर निकालना है और सकारात्मक बातों को अपने अंदर रखना है। यही कारण है कि जो लोग विनम्रता में हाथ जोड़कर बातें करते हैं, अथवा किसी विवादास्पद मुद्दे को हाथ जोड़कर खत्म करते हैं तो हाथों की सकारात्मक तरंगें निकलकर परिवेश में घुल जाती हैं। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके हाथ नहीं होते। ऐसे में वे प्रार्थना की मुद्रा किस प्रकार बनाएं? इस दर्द को समझा प्रणव वेम्पाती और उनकी टीम ने। प्रणव वेम्पाती, हर्षा रेड्डी पोंगुलेटी और सुरेन मरुममुला द्वारा वर्ष 2018 में एक स्टार्टअप की स्थापना की गई। वे मिसाइलमैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से बेहद प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने कलाम से संबंधित कलार्म बनाने की सोची। आज भी देश में अनेक लोग ऐसे हैं जो कृत्रिम अंगों विशेषकर कृत्रिम हाथों को खरीदने में असमर्थ हैं। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने हृदय रोग के लिए प्रसिद्ध और किफायती 'कलाम स्टेंट' विकसित किया था। इसी स्टेंट के तर्ज पर प्रणव वेम्पाती ने एक ऐसा कृत्रिम हाथ बनाने का निश्चय किया जो लोगों के लिए सुलभ हो सके और वे लोग जिनके हाथ नहीं हैं, वे उसका प्रयोग कर न केवल अपने दैनिक कार्य कर सकें, अपितु दोनों हाथों के माध्यम से प्रार्थना कर अपने हृदय को भी मजबूत कर सकें। इसके लिए प्रणव को हर्षा और सुरेन जैसे सह-संस्थापक मिले। समान सोच के साथ उन्होंने काम करना शुरू किया।

विकसित देशों में उन्नत कृत्रिम बायोनिक हाथों की कीमत 35 से 60 लाख तक होती है। प्रणव सबसे सस्ता बायोनिक हाथ बनाने में जुट गए। इसके लिए उन्होंने अनेक प्रयोग किए। आखिरकार उनकी मेहनत रंग लाई। उन्होंने 'कलार्म' नामक 3डी-प्रिंटेड हाथ बनाया है। यह 18 तरह की ग्रिप देता है, ईएमजी सेंसर से चलता है और 8 किलो तक का वजन उठा सकता है। इसकी कीमत अन्य देशों के मुकाबले बहुत कम है। 'कलार्म' की कीमत चार से छह लाख के बीच है। प्रणव इससे भी कम कीमत का 'कलार्म' लांच करने की योजना बना रहे हैं। इस तरह वे लोग जो हाथों से वंचित हैं, कलार्म द्वारा न केवल अपने सभी कामों को करके जीवन को आसान बना सकते हैं, अपितु प्रणाम की मुद्रा में अपने तन-मन को ऊर्जा से भी भर सकते हैं। प्रणव कहते हैं कि, 'जीवन में कुछ न कुछ ऐसा करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे मन को सुकून प्राप्त हो। मैं जब भी प्रार्थना करके अपने हाथ जोड़ता हूं तो मेरे मन से यही आवाज आती है कि तुम सक्षम हो तो अक्षम व्यक्तियों का सहारा बनो।' जिन व्यक्तियों के हाथ हैं उन्हें अपने इन हाथों की कीमत को समझना चाहिए और प्रकृति एवं ईश्वर के कृतज्ञ होने के साथ-साथ हाथों से ऐसे कार्य करने चाहिए, जिनसे आस-पास के परिवेश को भी सुख और समृद्धि प्राप्त हो। नमस्कार की मुद्रा में जुड़े हाथ खीझे हुए मन को शांत करने का एक सरल उपाय हैं। कहते हैं कि आधे-अधूरे दिल वाला कोई व्यक्ति चैंपियन नहीं बनता। इसलिए अपने हाथों को हृदय चक्र के पास से जोड़ते हुए पूरे दिल के स्वामी बनें और चैंपियन बनकर दूसरों के जीवन में भी मुस्कराहट लेकर आएं।

प्रेरणा

संकल्प की शक्ति और निरंतर प्रयास से रची जाती है सफलता की कहानी

मानव जीवन में सफलता कोई आकस्मिक घटना नहीं होती, बल्कि यह निरंतर प्रयास, धैर्य और अटूट संकल्प का परिणाम होती है। दुनिया में जितने भी महान व्यक्तित्व हुए हैं, उनके जीवन पर दृष्टि डालें तो एक समान सूत्र स्पष्ट रूप से दिखाई देता है—लगन। यही लगन साधारण व्यक्ति को असाधारण बनाती है और असंभव को संभव करने की शक्ति देती है। आइंस्टीन से जुड़ी यह छोटी-सी घटना इसी सत्य को गहराई से उजागर करती है कि महानता किसी जन्मजात प्रतिभा का चमत्कार नहीं, बल्कि निरंतर अभ्यास और आत्मविश्वास की देन होती है।

आम तौर पर लोग यह मान लेते हैं कि जो व्यक्ति महान कहलाता है, वह शुरू से ही प्रतिभाशाली रहा होगा, उसे संघर्ष या असफलता का सामना नहीं करना पड़ा होगा। लेकिन वास्तविकता इससे बिल्कुल विपरीत होती है। आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिक, जिनके सिद्धांतों ने विज्ञान की दिशा बदल दी, वे भी कभी डर, असफलता और उपहास से गुज़रे थे। गणित जैसे विषय से भयभीत होना, बार-बार असफल होना और सहपाठियों के ताने सुनना किसी भी व्यक्ति का मनोबल तोड़ सकता है। लेकिन यहीं पर लगन और आत्ममंथन का महत्व सामने आता है। जब व्यक्ति अपनी कमजोरियों को स्वीकार कर उनसे भागने के बजाय उनका सामना करने का निर्णय लेता है, तभी बदलाव की शुरुआत होती है। लगन का अर्थ केवल मेहनत करना नहीं है, बल्कि लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण होना है। यह वह मानसिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति बार-बार गिरने के बाद भी उठने का साहस रखता है। आइंस्टीन ने भी यही किया। उन्होंने अपने डर को स्वीकार किया, स्वयं से प्रश्न किया और फिर पूरे मन से गणित को समझने में जुट गए। शुरुआत में कठिनाइयां आई होंगी, लेकिन निरंतर अभ्यास ने कठिन सवालों को भी सरल बना दिया। यही प्रक्रिया हर क्षेत्र में लागू होती है। चाहे पढ़ाई हो, व्यवसाय हो, कला हो या खेल—लगन के बिना कोई भी ऊंचाई हासिल नहीं की जा सकती।

मानव मन स्वभाव से ही सुविधा चाहता है। जब कोई काम कठिन लगता है, तो मन उससे बचने के बहाने खोजने लगता है। असफलता का डर, आलोचना का भय और तुलना की भावना व्यक्ति को आगे बढ़ने से रोकती है। लेकिन लगन इन सभी बाधाओं को तोड़ने का कार्य करती है। यह व्यक्ति को सिखाती है कि असफलता अंत नहीं, बल्कि सीखने का एक पड़ाव है। जो लोग असफलता से घबराकर रुक जाते हैं, वे वहीं ठहर जाते हैं, जबकि जो लोग असफलता को अनुभव मानकर आगे बढ़ते हैं, वही सफलता की नई इबारत लिखते हैं।

आज के दौर में त्वरित सफलता की चाह ने लोगों के धैर्य को कमजोर कर दिया है। सोशल मीडिया और चमक-दमक भरी दुनिया यह भ्रम पैदा करती है कि सफलता रातोंरात मिल जाती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि हर उपलब्धि के पीछे वर्षों की मेहनत, अनुशासन और लगन छिपी होती है, जो बाहर से दिखाई नहीं देती। आइंस्टीन के सिद्धांतों की चमक के पीछे भी वर्षों का संघर्ष, असफल प्रयोग और गहन अध्ययन छिपा था। अगर उन्होंने शुरुआती असफलताओं के कारण प्रयास छोड़ दिया होता, तो शायद विज्ञान की दुनिया आज कुछ और ही होती।

लगन व्यक्ति के चरित्र को भी मजबूत बनाती है। यह आत्मविश्वास पैदा करती है और आत्मसम्मान को बढ़ाती है। जब व्यक्ति लगातार प्रयास करता है और धीरे-धीरे प्रगति देखता है, तो उसे अपने भीतर छिपी क्षमताओं का एहसास होने लगता है। यही एहसास उसे आगे बढ़ने की ऊर्जा देता है। लगन केवल लक्ष्य तक पहुंचने का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति को भीतर से परिपक्व और संतुलित भी बनाती है।

समाज में अक्सर लोग परिस्थितियों को दोष देकर अपने प्रयासों को सही ठहराने की कोशिश करते हैं। कोई संसाधनों की कमी का रोना रोता है, कोई अवसर न मिलने की शिकायत करता है। निस्संदेह परिस्थितियां महत्वपूर्ण होती हैं, लेकिन उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण होता है व्यक्ति का दृष्टिकोण। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सीमित संसाधनों और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जिन लोगों ने लगन नहीं छोड़ी, उन्होंने असाधारण उपलब्धियां हासिल कीं। लगन परिस्थितियों को बदलने की शक्ति देती है या कम से कम व्यक्ति को उनसे ऊपर उठने का साहस प्रदान करती है।

लगन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष निरंतरता है। कभी-कभी लोग उत्साह में शुरुआत तो जोरदार करते हैं, लेकिन थोड़ी-सी कठिनाई आते ही उनका उत्साह ठंडा पड़ जाता है। वास्तविक लगन वही है जो समय की परीक्षा पर खरी उतरती है। रोज़-रोज़ छोटे-छोटे प्रयास, अनुशासन और आत्मनियंत्रण मिलकर बड़ी सफलता का निर्माण करते हैं। यह प्रक्रिया धीमी जरूर होती है, लेकिन स्थायी होती है।

आइंस्टीन की कहानी हमें यह भी सिखाती है कि अपनी कमजोरियों को छिपाने या उनसे शर्मिंदा होने के बजाय उन्हें सुधारने पर ध्यान देना चाहिए। जब व्यक्ति स्वयं के प्रति ईमानदार होता है और सुधार के लिए तैयार रहता है, तभी वास्तविक विकास संभव होता है। लगन इसी ईमानदारी को मजबूत करती है और व्यक्ति को स्वयं का सर्वश्रेष्ठ रूप बनने के लिए प्रेरित करती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि महानता कोई रहस्यमय मंत्र नहीं, बल्कि एक सरल लेकिन कठिन मार्ग है, जिसका नाम है लगन। यह मार्ग धैर्य, अनुशासन और आत्मविश्वास की मांग करता है। जो व्यक्ति इस मार्ग पर डटा रहता है, वही समय के साथ अपनी पहचान बनाता है। आइंस्टीन की तरह हर व्यक्ति महान वैज्ञानिक न बने, यह जरूरी नहीं, लेकिन लगन के सहारे हर व्यक्ति अपने जीवन में सफलता, संतोष और आत्मसम्मान जरूर हासिल कर सकता है। यही लगन की असली विजय है और यही जीवन की सच्ची कामयाबी।

भगवान श्रीकृष्ण की नगरी Dwarka कल्पना नहीं हकीकत है, समुद्र और जमीन की गहराइयों में उतर कर सबूत सामने लायेगी ASI

भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास में द्वारका का नाम केवल एक नगर भर नहीं है, बल्कि यह आस्था, विश्वास और सभ्यता की निरंतरता का जीवंत प्रतीक है। अब वही द्वारका एक बार फिर चर्चा के केंद्र में है। हम आपको बता दें कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने प्राचीन द्वारका की खोज को नए सिरे से, अधिक गहराई और गंभीरता के साथ आगे बढाने का निर्णय लिया है। इस बार यह अभियान केवल सतही अध्ययन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि जमीन और समुद्र दोनों में गहन खुदाई के जरिये इतिहास की दबी हुई परतों को उजागर करने का प्रयास होगा। हम आपको बता दें कि अब तक हुए सीमित अध्ययनों में समुद्र के भीतर पत्थर की संरचनाएं, दीवारनुमा अवशेष और मानव बसावट के संकेत मिल चुके हैं। लेकिन इन संकेतों को निर्णायक प्रमाण में बदलने के लिए ASI अब आधुनिक तकनीक, उन्नत उपकरण और विशेषज्ञों की बहुविषयक टीम के साथ आगे बढ़ रहा है। इस नए अभियान का केंद्र गोमती नदी का मुहाना, समुद्री किनारे के वे हिस्से जहां अब तक खुदाई नहीं हुई, और बेट द्वारका जैसे क्षेत्र होंगे।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, ASI के वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि यह खुदाई केवल धार्मिक मान्यताओं की पुष्टि का प्रयास नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य यह समझना है कि प्राचीन द्वारका में जीवन कैसा था, वहां का शहरी ढांचा कैसा रहा होगा, व्यापार और संस्कृति किस स्तर पर थी और किस ऐतिहासिक प्रक्रिया के तहत यह नगर समुद्र में विलीन हुआ। यह अभियान भारत के समुद्री इतिहास, तटीय सभ्यता और प्राचीन नगर नियोजन की समझ को भी नया आयाम देगा।

देखा जाये तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारका की समुद्री विरासत पर पहले ही सार्वजनिक रूप से ध्यान आकर्षित कर चुके हैं। हम आपको याद दिला दें कि साल 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब अरब सागर की उथली लहरों के भीतर गहराई तक उतरकर प्राचीन द्वारका नगरी के अवशेषों के पास हाथ जोड़े थे तब पूरा भारत मंत्रमुग्ध हो उठा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समुद्र के भीतर स्थित उस स्थल पर स्कूबा डाइविंग करते हुए भगवान श्रीकृष्ण की नगरी को अपनी आंखों से देखा था, उसे प्रणाम किया था और इसे "दिव्य अनुभव" बताया था। उस दृश्य ने हजारों वर्षों से मौन इतिहास को एक जीवंत रूप में सामने ला दिया था। अब ASI की यह नई पहल इस विषय को ठोस ऐतिहासिक विमर्श में बदलने जा रही है।

देखा जाये तो सदियों तक द्वारका को मिथक कहकर खारिज किया गया, उसे आस्था का विषय कहकर इतिहास की किताबों से बाहर रखा गया। लेकिन अब वैज्ञानिक साक्ष्य सामने आने लगे हैं। साथ ही धार्मिक दृष्टि से द्वारका का महत्व असाधारण है। यह वह भूमि है जिसे भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि माना जाता है। पुराणों और महाभारत में वर्णित द्वारका कोई साधारण नगर नहीं थी, बल्कि एक समृद्ध, सुव्यवस्थित और शक्तिशाली नगरी थी। कहा जाता है कि श्रीकृष्ण ने मथुरा त्याग कर समुद्र तट पर इस नगर की स्थापना की थी ताकि अपने लोगों को निरंतर आक्रमणों से बचा सकें। यह निर्णय केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी क्रांतिकारी था। द्वारका सप्तपुरी में गिनी जाती है और चारधाम परंपरा में इसका स्थान सर्वोच्च है। यहां स्थित द्वारकाधीश मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि सनातन परंपरा की जीवंतता का अनुपम उदाहरण है। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु यहां आते हैं, केवल दर्शन के लिए नहीं, बल्कि उस इतिहास से जुडने के लिए जो पीढ़ियों से उनकी चेतना में प्रवाहित होता रहा है।

आज जब ASI समुद्र की गहराइयों में उतरने की तैयारी कर रहा है, तो वह केवल पत्थर और दीवारें खोजने नहीं जा रहा। वह उस स्मृति को खोजने जा रहा है जिसे लंबे समय तक नजरअंदाज किया गया। यह खोज उन प्रश्नों को चुनौती देती है जो कहते रहे कि भारत का प्राचीन इतिहास कल्पना पर आधारित है। द्वारका की खुदाई यह साबित करने की दिशा में कदम है कि हमारी परंपराएं, हमारे ग्रंथ और हमारी आस्थाएं किसी शून्य से नहीं उपजीं, बल्कि ठोस सामाजिक और भौगोलिक यथार्थ पर आधारित थीं।

यहां एक तीखा प्रश्न भी खड़ा होता है। यदि किसी अन्य सभ्यता से जुड़ा नगर समुद्र में डूबा मिलता, तो क्या उसे वैश्विक इतिहास की महान खोज नहीं कहा जाता। फिर द्वारका के साथ संकोच क्यों? क्या इसलिए कि यह भारत की धार्मिक चेतना से जुड़ी है। ASI की यह पहल उस मानसिकता पर भी प्रहार है जो भारतीय इतिहास को हमेशा संदेह की दृष्टि से देखती रही।

देखा जाये तो धार्मिक महत्व के साथ-साथ द्वारका सांस्कृतिक स्वाभिमान का विषय भी है। यह हमें याद दिलाती है कि भारत केवल आक्रमणों और पराजयों की कहानी नहीं है, बल्कि नगर निर्माण, समुद्री व्यापार और सभ्य जीवन की भी गौरवशाली परंपरा रहा है। द्वारका की खोज उस आत्मविश्वास को पुनर्जीवित करती है जो हमें अपने अतीत से कटने नहीं देता।

बहरहाल, यह कहना गलत नहीं होगा कि द्वारका की खुदाई केवल अतीत को जानने का प्रयास नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने का साहसिक कदम है। यह धर्म और विज्ञान के टकराव की नहीं, बल्कि उनके संवाद की कहानी है। यदि यह खोज अपने लक्ष्य तक पहुंचती है, तो यह केवल इतिहास की किताबों में एक नया अध्याय नहीं जोड़ेगी, बल्कि भारत की आत्मा को वह सम्मान लौटाएगी जिसकी वह सदियों से प्रतीक्षा कर रही है।

अभियान

अलाव की आग में पिघलती ठंड और रिश्तों में उतरती गर्माहट

कुछ पर्व ऐसे होते हैं जो केवल कैलेंडर की तारीख़ नहीं होते, बल्कि वे स्मृति, संवेदना और सामूहिक चेतना का हिस्सा बन जाते हैं। लोहड़ी भी ऐसा ही पर्व है, जो पंजाब की सांस्कृतिक आत्मा में इतनी गहराई से रचा-बसा है कि उसकी पहचान सिर्फ एक उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के उत्सव के रूप में होती है। यह पर्व प्रकृति, श्रम, सामूहिकता और उम्मीद के उस अद्भुत संगम को दर्शाता है, जहां मनुष्य अपने अस्तित्व को अकेले नहीं बल्कि समुदाय के साथ मिलकर महसूस करता है। लोहड़ी की रात जलने वाला अलाव केवल लकड़ियों और उपलों का ढेर नहीं होता, वह पीढ़ियों की स्मृतियों, लोककथाओं, गीतों और भावनाओं की गर्माहट को समेटे होता है।

हर साल जनवरी की ठिठुरती रात में जब शीत ऋतु अपने चरम पर होती है और सूर्य उत्तरायण होने की तैयारी में होता है, तब लोहड़ी का आगमन होता है। यह वह समय है जब खेतों में रबी की फसल आकार ले चुकी होती है और किसान की आंखों में मेहनत के फल की चमक दिखाई देने लगती है। कृषि प्रधान समाज के लिए यह केवल मौसम का बदलाव नहीं, बल्कि आशा का संकेत होता है। लोहड़ी उसी आशा को सामूहिक उत्सव में बदल देती है। गांवों से लेकर शहरों तक, खुले मैदानों से लेकर घरों के आंगन तक, हर जगह अलाव जलाए जाते हैं और लोग उसके चारों ओर इकट्ठा होकर प्रकृति को धन्यवाद देते हैं। यह धन्यवाद केवल शब्दों में नहीं, बल्कि गीतों, नृत्य और साझा भोजन के रूप में प्रकट होता है। लोहड़ी की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सामूहिकता है। यह ऐसा पर्व नहीं है जिसे अकेले मनाया जाए। अलाव तभी अर्थपूर्ण होता है जब उसके चारों ओर लोग हों। जब आग जलती है और उसमें तिल, गुड़, मूंगफली और रेवड़ी अर्पित की जाती है, तब व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत पहचान से ऊपर उठकर समुदाय का हिस्सा बन जाता है। अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष का भेद उस आग के सामने अर्थहीन हो जाता है। यह सामूहिक कर्मकांड मनुष्य को यह एहसास कराता है कि जीवन की ठंड केवल व्यक्तिगत संघर्ष से नहीं, बल्कि साझा गर्माहट से दूर होती है। आग का प्रतीक भारतीय संस्कृति में हमेशा से पवित्रता और ऊर्जा से जुड़ा रहा है। लोहड़ी की आग भी उसी परंपरा का विस्तार है। यह आग केवल शरीर को गर्म नहीं करती, बल्कि मन और आत्मा को भी ऊर्जा देती है। लोग अलाव की परिक्रमा करते हैं, मानो अपने भीतर की नकारात्मकता, भय और थकान को उस आग में समर्पित कर रहे हों। यह प्रक्रिया केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक मानसिक और भावनात्मक शुद्धिकरण भी है। लोहड़ी हमें यह सिखाती है कि पुराने दुखों और असफलताओं को पीछे छोड़कर नए उत्साह के साथ आगे बढ़ना ही जीवन का सार है। लोहड़ी का उत्सव लोकगीतों के बिना अधूरा है। 'सुंदर, मुंदरिये हो' की गूंज जैसे ही वातावरण में फैलती है, पूरा माहौल जीवंत हो उठता है। इन गीतों में केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि इतिहास और लोकचेतना की गहरी परतें छिपी हैं। दुल्ला भट्टी का नाम लोहड़ी के गीतों में बार-बार आता है, जो केवल एक ऐतिहासिक पात्र नहीं, बल्कि पंजाबी समाज के लिए न्याय, साहस और मानवीय करुणा का प्रतीक है। उसने अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई, बेटियों की रक्षा की और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध खड़ा हुआ। लोहड़ी की रात जब ढोल की थाप पर भांगड़ा और गिद्धा अपने चरम पर होते हैं, तब भी दुल्ला भट्टी का स्मरण यह याद दिलाता है कि उत्सव और नैतिक मूल्य एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

लोहड़ी का खानपान उसकी सादगी में ही उसकी पहचान को मजबूत करता है। तिल, गुड़, मूंगफली, मक्का और रेवड़ी जैसे खाद्य पदार्थ न केवल शीत ऋतु के अनुकूल होते हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन की सरलता और प्रकृति से जुड़ाव को भी दर्शाते हैं। यह पर्व यह संदेश देता है कि उत्सव का आनंद भव्य व्यंजनों में नहीं, बल्कि साझा स्वाद और अपनापन में छिपा होता है। आधुनिक समय में भले ही खानपान में विविधता आ गई हो, लेकिन लोहड़ी की आत्मा आज भी उन्हीं सादे और पोषण से भरपूर खाद्य पदार्थों में बसती है।

लोहड़ी का सामाजिक पक्ष तब और गहरा हो जाता है जब किसी घर में नई बहू या नवजात शिशु की पहली लोहड़ी मनाई जाती है। यह केवल एक पारिवारिक आयोजन नहीं, बल्कि पूरे समाज द्वारा नए जीवन के स्वागत का उत्सव होता है। उपहार, गीत और सामूहिक सहभागिता यह दर्शाती है कि व्यक्ति अकेला नहीं है, समाज उसके साथ है। यह परंपरा सामूहिक जिम्मेदारी और आपसी सहयोग की भावना को मजबूत करती है, जो किसी भी स्वस्थ समाज की नींव होती है।

पंजाबी संस्कृति की जीवंतता लोहड़ी में पूरी तरह झलकती है। यहां कोई औपचारिकता नहीं, कोई बनावटी अनुशासन नहीं। जो मन में है, वही नृत्य है, वही गीत है। ढोल की थाप पर थिरकते कदम, गिद्धा की ताल पर गूंजती तालियां और खुलकर हंसते चेहरे यह बताते हैं कि जीवन को बोझ की तरह नहीं, बल्कि उत्सव की तरह जीना चाहिए। लोहड़ी यह सिखाती है कि उल्लास कोई विलास नहीं, बल्कि जीवन की मूल आवश्यकता है। आज के आधुनिक और शहरी जीवन में भी लोहड़ी की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। गांवों से निकलकर यह पर्व शहरों की सोसाइटियों, अपार्टमेंट्स और यहां तक कि विदेशों में बसे पंजाबी समुदायों तक पहुंच चुका है। प्रवासी पंजाबी परिवारों के लिए लोहड़ी अपनी जड़ों से जुड़े रहने का माध्यम बन गई है। यह पर्व उन्हें याद दिलाता है कि भले ही भौगोलिक दूरी बढ़ जाए, सांस्कृतिक पहचान दिल से दूर नहीं होती।

लोहड़ी का महत्व केवल पंजाब तक सीमित नहीं रहा। यह पर्व धीरे-धीरे अन्य समुदायों को भी आकर्षित कर रहा है, क्योंकि इसकी आत्मा सार्वभौमिक है। सामूहिकता, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और जीवन के प्रति उत्साह ऐसे मूल्य हैं, जो हर समाज को जोड़ते हैं। यही कारण है कि लोहड़ी आज एक क्षेत्रीय पर्व से आगे बढ़कर सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बन चुकी है।

आधुनिक समय में जब तकनीक और व्यस्त जीवनशैली ने लोगों के बीच दूरी बढ़ा दी है, तब लोहड़ी जैसे पर्व हमें रुककर एक-दूसरे के साथ समय बिताने का अवसर देते हैं। यह पर्व याद दिलाता है कि रिश्तों की गर्माहट किसी हीटर या मशीन से नहीं, बल्कि मानवीय संपर्क से आती है। अलाव के चारों ओर बैठकर गाए गए गीत और साझा की गई हंसी उस दूरी को पाट देती है, जो रोजमर्रा की भागदौड़ में बन जाती है। अंततः लोहड़ी केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण है। यह सिखाती है कि परिवर्तन से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उसका स्वागत करना चाहिए। यह बताती है कि सामूहिकता में शक्ति है, सादगी में आनंद है और परंपरा में भविष्य की राह छिपी है। अलाव की आग में जब ठंड पिघलती है और रिश्तों में गर्माहट उतरती है, तब लोहड़ी केवल एक रात का उत्सव नहीं रह जाती, बल्कि पूरे वर्ष के लिए सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत बन जाती है। यही लोहड़ी की असली पहचान है—एक ऐसा पर्व जो मनुष्य, प्रकृति और समाज को एक ही लय में बांध देता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव – 2026, अहमदाबाद

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा जर्मनी के चांसलर श्री फ्रेडरिक मर्ज ने पतंग उड़ाकर किया आईकेएफ-2026 का भव्य प्रारंभ

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद के साबरमती रिवरफ्रंट से सोमवार को 'अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव (आईकेएफ)-2026' का शुभारंभ कराया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में जर्मनी के चांसलर श्री फ्रेडरिक मर्ज उपस्थित रहे। दोनों महानुभावों ने पतंग उड़ाकर इस महोत्सव का शुभारंभ कराया, जो भारत तथा जर्मनी के बीच सुदृढ़ राजनयिक संबंधों एवं मित्रता की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी भी उपस्थित रहे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा जर्मन चांसलर श्री फ्रेडरिक मर्ज ने इस अवसर पर अहमदाबाद की पोल व हवेली की विशेष रूप से तैयार की गई स्थापत्य कला की प्रतिकृति को देखा। उत्तरायण केवल पतंगबाजी ही नहीं, बल्कि गुजरात की सांस्कृतिक पहचान समान उत्सव है। ऐसे में इस हेरिटेज वॉकवे पर पतंग म्यूजियम तथा आइकॉनिक फोटो वॉल भी बनाए गए हैं, जहाँ दोनों महानुभावों ने विभिन्न राज्यों की अलग-अलग कागज तथा बनावट की पतंगों के बारे में सूक्ष्मतापूर्वक जानकारी भी प्राप्त की। यहाँ पतंग बनाने वाले कारीगरों द्वारा पतंग बनाने की कला का जीवंत निदर्शन भी किया गया, जिसे महानुभावों ने रुचिपूर्वक देखा। इस अवसर पर गुजरात के बेडा रास (घड़ा रास) के अलावा; कुचिपुड़ी, भरत नाट्यम सहित नृत्यकला तथा मलखम जैसी प्राचीन अंग व्यायाम कला द्वारा विशेष प्रस्तुति के माध्यम से दोनों महानुभावों का स्वागत किया गया। इसके अतिरिक्त; इस अवसर पर गुजरात-राजस्थान के कुल लगभग 108 कलाकारों द्वारा सितार, सारंगी, वायलीन, मेंडोलिन, हार्मोनियम, बाँसुरी, ढोलक, तबला, मृदंग आदि विभिन्न वाद्यों के माध्यम से 'वंदे मारतम्', 'वैष्णजन' तथा जर्मन धुन बजाकर भारत व जर्मनी की मित्रता की प्रतीति कराई गई। उल्लेखनीय है कि गुजरात पर्यटन निगम लिमिटेड (टीसीजीएल) द्वारा आयोजित इस रंगबिरंगी आकाशी महोत्सव में इस वर्ष 50 देशों के 135 अंतरराष्ट्रीय पतंगबाज तथा भारत के 13 राज्यों के 65 पतंगबाज अपनी भाँति-भाँति के रंगों और आकारों की पतंगों के साथ सहभागी हुए हैं। इसी प्रकार; गुजरात के 16 जिलों से 871 पतंगबाज भी उपस्थित रहकर कला का प्रदर्शन कर रहे हैं। इस अवसर पर राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य, स्थानीय विधायक, महानगर पालिका के पदाधिकारी, राज्य सरकार के वरिष्ठ सचिव तथा अधिकारी उपस्थित रहे।

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रोत्साहक उपस्थिति

▸▸ अहमदाबाद के आकाश में छाया रंगों का उत्सव, साबरमती रिवरफ्रंट पर भारत के अलावा लगभग 50 देशों के 1000 से अधिक पतंगबाजों का जमावड़ा

▸▸ संगीत एवं नृत्य के अनूठे संगम से प्रधानमंत्री तथा जर्मन चांसलर का किया गया विशिष्ट स्वागत

अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव-2026 बना भारत-जर्मनी की मित्रता का प्रतीक

13 जनवरी की शाम संगीत तथा रंगों का अनूठा समन्वय सृजित होगा

अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव में 13 जनवरी मंगलवार को शाम 7 बजे 108 कलाकारों द्वारा भव्य सिम्फनी प्रदर्शन तथा विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा कला एवं संगीत का अनुभव कराया जाएगा। इसमें लोक गायिका किंजल दवे द्वारा प्रस्तुति दी जाएगी, जबकि आकाश रंगबिरंगी रात्रि पतंगों से झिलमिला उठेगा।

आगंतुकों को कराया जाएगा गुजराती व्यंजन व हस्तकला का परिचय

अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव जैसे राज्य की सांस्कृतिक धरोहरों को उजागर करने वाले आयोजनों के माध्यम से समग्र गुजरात की पहचान विश्व स्तर पर अग्रणी सांस्कृतिक एवं पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित हो रही है। ऐसे में आगंतुकों को गुजरात के व्यंजन तथा हस्तकला का परिचय कराने के लिए 25 हस्तकला स्टॉल और 15 फूड स्टॉल भी बनाए गए हैं।

लगभग 50 देशों के पतंगबाज इस महोत्सव में कला प्रदर्शित कर रहे हैं

अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव-2026 में अल्जीरिया, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, बेलारूस, बेल्जियम, ब्राजील, बुल्गारिया, कंबोडिया, कनाडा, चिली, चीन, कोलंबिया, कोस्टारिका, डेनमार्क, मिस्र, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, ग्वाटेमाला, हंगरी, इंडोनेशिया, आयर्लैंड, इजराइल, इटली, जापान, दक्षिण कोरिया, लेबनॉन, लिथुनिया, मलेशिया, मॉरीशस, मेक्सिको, न्यूजीलैंड, फिलीपींस, पोलैंड, पुर्तगाल, रूस, सिंगापुर, स्लोवाकिया, दक्षिण अफ्रीका, स्पेन, श्रीलंका, स्वीडन, थाईलैंड, तुर्कमेनिस्तान, यूक्रेन, ब्रिटेन, अमेरिका, वियतनाम, स्लोवेनिया, बहरीन, नेपाल, तुर्की, जॉर्डन सहित कुल लगभग 50 देशों के पतंगबाज हिस्सा ले रहे हैं।

कांदिवली-बोरीवली सेक्शन पर छठी लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा कांदिवली और बोरीवली सेक्शन के बीच छठी लाइन के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसंबर, 2025 की रात से 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है, जो 18 जनवरी, 2026 तक जारी रहेगा। इस ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेन सेवाएं प्रभावित होंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, उपर्युक्त कार्य के संबंध में 13/14 जनवरी, 2026 की रात को कांदिवली एवं मालाड स्टेशनों के बीच प्वाइंट 103 के डिस्मैंटलिंग हेतु एक मेजर ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक अप फास्ट लाइन पर 00:00 बजे से 05:30 बजे तक तथा डाउन फास्ट लाइन पर 01:00 बजे से 04:30 बजे तक रहेगा। इसके अतिरिक्त, 14/15 जनवरी, 2026 को कांदिवली एवं मालाड स्टेशनों के बीच प्वाइंट 102 के डिस्मैंटलिंग हेतु भी एक मेजर ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक अप फास्ट लाइनों पर 00:00 बजे से 05:30 बजे तक तथा डाउन फास्ट लाइन पर 01:00 बजे से 04:30 बजे तक रहेगा।

उपर्युक्त ब्लॉक, पाँचवीं लाइन के निलंबन तथा लगाए गए गति प्रतिबंध के कारण कुछ उपनगरीय सेवाएं निरस्त रहेंगी, जबकि अप फास्ट लाइन की कुछ मेल/एक्सप्रेस ट्रेनें प्रभावित होंगी।

शॉर्ट टर्मिनेट होने वाली ट्रेनें:

1. 13 एवं 14 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19426 नंदुरबार–बोरीवली एक्सप्रेस वसई रोड पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी।
2. 13 एवं 14 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस वसई रोड पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी।

शॉर्ट ओरिजिनेट होने वाली ट्रेनें:

1. 14 एवं 15 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19425 बोरीवली–नंदुरबार एक्सप्रेस वसई रोड से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी।
2. 14 एवं 15 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19417 बोरीवली–अहमदाबाद एक्सप्रेस वसई रोड से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी।

ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली उपनगरीय ट्रेनों की विस्तृत सूची अनुलग्नक–I एवं II में दी गई है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी संबंधित स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध है। यात्रियों से अनुरोध है कि उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा की योजना बनाएं।

गांधीनगर कैपिटल–वाराणसी साप्ताहिक एक्सप्रेस के टर्मिनल स्टेशन में परिवर्तन

रेल प्रशासन द्वारा गाड़ी संख्या 22468/22467 गांधीनगर कैपिटल–वाराणसी साप्ताहिक एक्सप्रेस के टर्मिनल स्टेशन में परिवर्तन करने का निर्णय लिया गया है। दिनांक 05.03.2026 से

(जीएनएस)। गांधीनगर कैपिटल–वाराणसी एक्सप्रेस वाराणसी (BSB) स्टेशन के स्थान पर बनारस (BNRS) स्टेशन जाएगी। परिवर्तन का विवरण निम्नानुसार है:

गाड़ी संख्या 22468 गांधीनगर कैपिटल–बनारस एक्सप्रेस दिनांक 05.03.2026 से बनारस (BNRS) स्टेशन पर 23.30 बजे पहुंचेगी।

गाड़ी संख्या 22467 बनारस–गांधीनगर कैपिटल एक्सप्रेस दिनांक 04.03.2026 से बनारस (BNRS) स्टेशन से 15.10 बजे प्रारंभ होगी।

टर्मिनल परिवर्तन के कारण बनारस स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान समय में संशोधन किया गया है। गांधीनगर कैपिटल और लोहता स्टेशनों के बीच समय-सारणी में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

इस ट्रेन के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

ज्ञानवापी वजूखाना विवाद पर फिलहाल विराम, हाईकोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट की लंबित सुनवाई को देखते हुए टाली कार्यवाही

(जीएनएस)। प्रयागराज। वाराणसी स्थित ज्ञानवापी मस्जिद के वजूखाना का वैज्ञानिक सर्वे कराने से जुड़े संवेदनशील मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने फिलहाल कोई अंतिम निर्णय देने से परहेज किया है। सोमवार को हुई सुनवाई के दौरान अदालत ने यह स्पष्ट किया कि चूंकि इस पूरे प्रकरण से संबंधित याचिका सर्वोच्च न्यायालय में पहले से लंबित है, इसलिए उच्च न्यायालय में इस स्तर पर आगे की कार्यवाही उचित नहीं होगी। इसी आधार पर न्यायालय ने सुनवाई स्थगित करते हुए अगली तारीख तीन फरवरी निर्धारित कर दी है।

यह मामला एक बार फिर से उस बहुचर्चित ज्ञानवापी विवाद को चर्चा के केंद्र में ले आया है, जिसने बीते कुछ वर्षों में न केवल न्यायिक हलकों में बल्कि सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर भी गहरी बहस को जन्म दिया है। वजूखाना सर्वे की मांग को लेकर दाखिल याचिका पर सुनवाई न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल की एकलपीठ के समक्ष हुई। याचिकाकर्ता राखी सिंह की ओर से यह दलील दी गई कि विवादित स्थल की वास्तविक धार्मिक प्रकृति स्पष्ट करने के लिए वैज्ञानिक सर्वे आवश्यक है, ताकि ऐतिहासिक तथ्यों को सामने लाया जा सके। याचिका में यह भी कहा गया कि वजूखाना परिसर में पहले किए गए निरीक्षण और वीडियोग्राफी के दौरान कुछ ऐसे संकेत सामने आए थे, जिनके आधार पर विस्तृत और वैज्ञानिक सर्वे कराना जरूरी हो जाता है। याचिकाकर्ता पक्ष का तर्क है कि आधुनिक तकनीक और विशेषज्ञों की मदद से किए गए सर्वे से भ्रम और विवाद की स्थिति को स्थायी रूप से सुलझाया जा सकता है। उनका कहना है कि न्यायिक प्रक्रिया का उद्देश्य सत्य तक पहुंचना होता है और वैज्ञानिक सर्वे उसी दिशा में एक कदम हो सकता है।

वहीं दूसरी ओर, मुस्लिम पक्ष ने इस मांग का लगातार विरोध किया है। उनका कहना है कि वजूखाना मस्जिद का अभिन्न हिस्सा है और वहां किसी भी प्रकार का सर्वे धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचा सकता है। मुस्लिम पक्ष के अधिवक्ताओं ने अदालत में यह भी तर्क रखा कि सर्वोच्च न्यायालय पहले ही इस पूरे मामले से जुड़े अहम पहलुओं पर विचार कर रहा है, ऐसे में समानांतर रूप से उच्च न्यायालय में सुनवाई से न्यायिक अनुशासन प्रभावित हो सकता है।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद इस तथ्य पर विशेष ध्यान दिया कि ज्ञानवापी प्रकरण से संबंधित याचिकाएं और अंतरिम आदेश सुप्रीम कोर्ट के समक्ष लंबित हैं। अदालत ने यह माना कि सर्वोच्च न्यायालय में लंबित मामलों के रहते किसी भी प्रकार का आदेश देना उचित नहीं होगा, जिससे भविष्य में न्यायिक टकराव की स्थिति उत्पन्न हो। इसी कारण अदालत ने मामले की सुनवाई को स्थगित करने का निर्णय लिया।

इस आदेश के बाद एक बार फिर यह स्पष्ट हो गया है कि ज्ञानवापी विवाद की दिशा और दशा काफी हद तक सुप्रीम कोर्ट के फैसलों पर निर्भर करेगी। इससे पहले भी शीर्ष अदालत ने इस प्रकरण में कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए हैं और निचली अदालतों तथा उच्च न्यायालयों को सावधानी बरतने की सलाह दी है। ऐसे में इलाहाबाद हाईकोर्ट का यह कदम न्यायिक मर्यादा और संस्थागत संतुलन के रूप में देखा जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि ज्ञानवापी मस्जिद विवाद पिछले कुछ वर्षों में लगातार कानूनी मोर्चे पर आगे बढ़ता रहा है। वाराणसी की सिविल कोर्ट से शुरू होकर यह मामला उच्च न्यायालय और फिर सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच चुका है। हर सुनवाई के साथ यह मुद्दा और अधिक संवेदनशील होता गया है, क्योंकि इसमें आस्था, इतिहास और कानून—तीनों का जटिल संगम देखने को मिलता है।

वजूखाना को लेकर विवाद तब और गहरा गया था जब सर्वेक्षण और वीडियोग्राफी के दौरान कुछ संरचनाओं को लेकर अलग-अलग दावे सामने आए थे। इसके बाद से ही वैज्ञानिक सर्वे की मांग तेज होती चली गई। हालांकि, अदालतें लगातार यह संकेत देती रही हैं कि किसी भी निर्णय में कानून और सामाजिक सौहार्द—दोनों का संतुलन बनाए रखना जरूरी है।

हाईकोर्ट द्वारा सुनवाई स्थगित किए जाने के बाद अब सभी की निगाहें तीन फरवरी पर टिकी हैं, जब इस मामले में अगली सुनवाई होनी है। साथ ही यह भी तय माना जा रहा है कि सुप्रीम कोर्ट में होने वाली कार्यवाही इस विवाद की आगे की दिशा तय करने में निर्णायक भूमिका निभाएगी। फिलहाल, अदालत के इस फैसले को एक अस्थायी विराम के रूप में देखा जा रहा है, न कि किसी अंतिम निष्कर्ष के तौर पर।

कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर छठी लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा कांदिवली और बोरीवली सेक्शन के बीच छठी लाइन के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसंबर, 2025 की रात से 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है, जो 18 जनवरी, 2026 तक जारी रहेगा। इस ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेन सेवाएं प्रभावित होंगी।

आंशिक निरस्त होने वाली ट्रेनें:

13 एवं 14 जनवरी, 2026 की ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस वसई रोड पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इस प्रकार यह ट्रेन वसई रोड-बोरीवली के बीच आंशिक निरस्त रहेगी। 14 एवं 15 जनवरी, 2026 की ट्रेन संख्या 19417 बोरीवली–अहमदाबाद एक्सप्रेस वसई रोड से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इस प्रकार यह ट्रेन बोरीवली-वसई रोड के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

13 जनवरी की साबरमती-जैसलमर एक्सप्रेस पोकरण स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मण्डल में राईका बाग पैलेस-जैसलमर सेक्शन में जेठा चांदन-थईरात हमीरा स्टेशनों के बीच ब्रिज नं.170 पर इंजीनियरिंग कार्य हेतु ट्राफिक ब्लॉक लिया गया है। जिसके कारण साबरमती-जैसलमर एक्सप्रेस आंशिक निरस्त रहेगी। जिसका विवरण निम्नानुसार है:

13 जनवरी 2026 की ट्रेन संख्या 20492 साबरमती-जैसलमर एक्सप्रेस पोकरण स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए यह ट्रेन पोकरण और जैसलमर के बीच आंशिक निरस्त रहेगी। 14 जनवरी 2026 की ट्रेन संख्या 20491 जैसलमर-साबरमती एक्सप्रेस पोकरण स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए यह ट्रेन जैसलमर और पोकरण के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

स्वास्थ्य कारणों से पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ एम्स में भर्ती, डॉक्टरों की कड़ी निगरानी में चल रहा इलाज

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश के पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की तबीयत बिगड़ने के बाद सोमवार को उन्हें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार, 10 जनवरी को उन्हें दो बार अचानक बेहोशी के दौरे पड़े थे, जिसके बाद चिकित्सकों ने एहतियातन उन्हें एम्स में भर्ती कर व्यापक चिकित्सकीय जांच कराने की सलाह दी। अस्पताल सूत्रों का कहना है कि फिलहाल उनकी स्थिति स्थिर है और विशेषज्ञ डॉक्टरों की एक टीम लगातार उनके स्वास्थ्य पर नजर बनाए हुए है। बताया जा रहा है कि पूर्व उपराष्ट्रपति को बेहोशी के दौरे पड़ने के बाद पहले प्राथमिक स्तर पर जांच की गई थी, लेकिन उम्र और पूर्व में चली आ रही स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को देखते हुए विस्तृत जांच को आवश्यक माना गया। इसी के तहत उन्हें देश के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित सरकारी अस्पताल एम्स में भर्ती किया गया, जहां हृदय, न्यूरोलॉजी और जनरल मेडिसिन के वरिष्ठ विशेषज्ञ उनकी जांच कर रहे हैं। चिकित्सकों ने प्रारंभिक तौर पर किसी गंभीर या जानलेवा खतरे की आशंका से इनकार किया है, लेकिन एहतियात के तौर पर सभी जरूरी परीक्षण किए जा रहे हैं। एम्स प्रशासन की ओर से बताया गया है कि जगदीप धनखड़ को फिलहाल एक विशेष वार्ड में रखा गया है, जहां उनकी 24 घंटे निगरानी की जा रही है। डॉक्टरों के अनुसार, बेहोशी के दौरे कई कारणों से हो सकते हैं, जिनमें ब्लड प्रेशर में अचानक गिरावट, हृदय से जुड़ी समस्या, न्यूरोलॉजिकल कारण या दवाओं के दुष्प्रभाव भी शामिल हो सकते हैं। इन्हीं सभी संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए उनके ईसीजी, इकोकार्डियोग्राफी, ब्रेन स्कैन और अन्य रक्त जांच की जा रही हैं। जगदीप धनखड़ देश के उन संवैधानिक पदाधिकारियों में रहे हैं, जिन्होंने अपने लंबे सार्वजनिक जीवन में कई अहम जिम्मेदारियां निभाई हैं। उन्होंने वर्ष 2022 में भारत के 14वें उपराष्ट्रपति के रूप में पदभार संभाला था। उपराष्ट्रपति रहते हुए वे राज्यसभा के सभापति भी रहे और संसद की कार्यवाही के संचालन में उनकी सक्रिय भूमिका रही। हालांकि स्वास्थ्य संबंधी कारणों के चलते उन्होंने 21 जुलाई 2025 को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था, जिसे राष्ट्रपति द्वारा स्वीकार कर लिया गया था। उनके इस्तीफे के समय भी उन्होंने सार्वजनिक जीवन में स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर जोर दिया था। उपराष्ट्रपति बनने से पहले जगदीप धनखड़ 2019 से 2022 तक पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के पद पर भी रहे थे। राज्यपाल के रूप में उनका कार्यकाल काफी चर्चित रहा और इस दौरान वे राज्य सरकार के साथ कई मुद्दों पर मुखर नजर आए। संवैधानिक मर्यादाओं और संघीय ढांचे को लेकर उनकी टिप्पणियां और फैसले राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बने। इसके अलावा वे लंबे समय तक वकालत और राजनीति से भी जुड़े रहे हैं और सार्वजनिक जीवन में उनका अनुभव व्यापक माना जाता है।

उनके एम्स में भर्ती होने की खबर सामने आने के बाद राजनीतिक और सामाजिक हलकों में चिंता का माहौल देखा गया। विभिन्न दलों के नेताओं, पूर्व और वर्तमान सांसदों तथा सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोगों ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है। कई नेताओं ने निजी तौर पर भी एम्स प्रशासन से उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली है। हालांकि परिवार और चिकित्सकों की ओर से अपील की गई है कि अफवाहों से बचा जाए और केवल आधिकारिक सूचनाओं पर ही भरोसा किया जाए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का तीन दिवसीय गुजरात दौरा संपन्न

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को अहमदाबाद एयरपोर्ट से भावपूर्ण विदाई दी गई

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को अपने गुजरात के तीन दिवसीय दौरे को पूर्ण कर अहमदाबाद एयरपोर्ट से नई दिल्ली के लिए रवाना हुए।

एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री को राज्यपाल आचार्य देवव्रत, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी एवं एवं महानुभावों ने भावपूर्ण विदाई दी।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री को मुख्य सचिव श्री एम.के. दास, राजनीतिक अग्रणी श्री जगदीश विश्वकर्मा, अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, एयर मार्शल तेजेंद्र सिंह, अपर मुख्य सचिव डॉ. अंजू शर्मा, राज्य के प्रभारी पुलिस महानिदेशक श्री के. एल. एन. राव, अहमदाबाद पुलिस आयुक्त श्री जी. एस. मलिक, मुख्य प्रोटोकॉल अधिकारी श्री ज्वलंत त्रिवेदी, अहमदाबाद जिला कलेक्टर श्री सुजीत कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं पदाधिकारी ने भावपूर्ण विदाई दी।

सोना-चांदी वायदा ऑल टाइम हाई: सोना वायदा में 2691 रुपये और चांदी वायदा में 11728 रुपये का ऊछाल

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 208438.15 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 47121.78 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 161308.22 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 37319 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2890.18 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 39008.26 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 139600 रुपये के भाव पर खूलकर, 141643 रुपये के दिन के उच्च और 139600 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 138819 रुपये के पिछले बंद के सामने 2691 रुपये या 1.94 फीसदी की मजबूती के साथ 141510 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा 1370 रुपये या 1.21 फीसदी की तेजी के संग 114326 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 183 रुपये या 1.3 फीसदी की तेजी के संग 14296 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 139279 रुपये के भाव पर खूलकर, 141899 रुपये के दिन के उच्च और 139279 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 2513 रुपये या 1.81 फीसदी की तेजी के संग 141210 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 139499 रुपये के भाव पर खूलकर, 141874 रुपये के दिन के उच्च और 139499 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 139030 रुपये के पिछले बंद के सामने 2742 रुपये या 1.97 फीसदी की तेजी के संग 141772 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 262834 रुपये के भाव पर खूलकर, 265481 रुपये के दिन के उच्च और 260711 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 252725 रुपये के पिछले बंद के सामने 11728 रुपये या 4.64 फीसदी की मजबूती के साथ 264453 रुपये प्रति किलो बोला गया। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 11479 रुपये या 4.5 फीसदी की तेजी के संग 266372 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 11471 रुपये या 4.5 फीसदी बढ़कर 266391 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

▸▸ क्रूड ऑयल वायदा 68 रुपये फिसला : कमोडिटी वायदाओं में 47121.78 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 161308.22 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 39008.26 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 37319 पॉइंट के स्तर पर

मेटल वर्ग में 5283.57 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा 36.6 रुपये या 2.86 फीसदी बढ़कर 1317.9 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 4.25 रुपये या 1.38 फीसदी की तेजी के संग 313.3 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा 10 पैसे या 0.03 फीसदी की नरमी के साथ 317.3 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा जनवरी वायदा 1.55 रुपये या 0.81 फीसदी की तेजी के संग 193.2 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 2825.70 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा 5364 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5364 रुपये और नीचे में 5282 रुपये पर पहुंचकर, 68 रुपये या 1.27 फीसदी घटकर 5284 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा 67 रुपये या 1.25 फीसदी लुढ़ककर 5285 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 293.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 297.2 रुपये के दिन के उच्च और 289.3 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 294.2 रुपये के पिछले बंद के सामने 20 पैसे या 0.07 फीसदी की नरमी के साथ 294 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा 30 पैसे या 0.1 फीसदी टूटकर 294.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा 989 रुपये पर खूलकर, 7.6 रुपये या 0.77 फीसदी औंधकर 982 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 19327.08 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 19681.18 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 4183.04 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 644.07 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 46.49 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 396.19 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 753.39 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2060.64 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 3.56 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.13 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 19822 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 75530 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 24708 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 366628 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 37972 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 15176 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 37867 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 98306 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 22339 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 51466 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा 36812 पॉइंट पर खूलकर, 37349 के उच्च और 36812 के नीचले स्तर को छूकर, 861 पॉइंट बढ़कर 37319 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल जनवरी 5300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 59.4 रुपये की गिरावट के साथ 70 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू बिना बदलाव के 14.45 रुपये हुआ।

सोना जनवरी 144000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 763 रुपये की बढ़त के साथ 1505 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी जनवरी 260000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 5742.5 रुपये की बढ़त के साथ 15569 रुपये हुआ। तांबा जनवरी 1370 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 11.03 रुपये की बढ़त के साथ 22.03 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 65 पैसे के सुधार के साथ 3.59 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल जनवरी 5300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 14.2 रुपये की बढ़त के साथ 92.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 290 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 20 पैसे की नरमी के साथ 14.5 रुपये हुआ।

सोना जनवरी 135000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 321 रुपये की गिरावट के साथ 591 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी जनवरी 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 3904 रुपये की गिरावट के साथ 7188.5 रुपये हुआ। तांबा जनवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 17.59 रुपये की गिरावट के साथ 31.35 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.13 रुपये की गिरावट के साथ 1.65 रुपये हुआ।

वीजीआरसी-2026

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस में 5.78 लाख करोड़ रुपए के 5492 एमओयू संपन्न : कैबिनेट मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी

- विकसित भारत@2047 के संकल्प में सौराष्ट्र–कच्छ बनेगा देश का ग्रोथ इंजन : मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी
- श्री जीतूभाई वाघाणी ने 15 जनवरी तक चलने वाली एग्जीबिशन का अधिक से अधिक लाभ लेने का औद्योगिक इकाइयों और नागरिकों से किया अनुरोध
- सौराष्ट्र के उद्योगकार न्यू एज टेक्नोलॉजी क्षेत्र में निवेश कर आगे बढ़ें : कैबिनेट मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया का आह्वान
- 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस' सौराष्ट्र कच्छ की क्षमता को दुनिया के समक्ष उजागर करने का बड़ा प्लेटफॉर्म बनी : कैबिनेट मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया
- वीजीआरसी में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले एमएसएमई और प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया

(जीएनएस)। राजकोट : राजकोट स्थित मारवाड़ी यूनिवर्सिटी में आयोजित दो दिवसीय 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस-कच्छ और सौराष्ट्र' का सोमवार को समापन हुआ। कैबिनेट मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने इस कॉन्फ्रेंस के दौरान 5.78 लाख करोड़ रुपए के निवेश के 5492 समझौता ज्ञापन (एमओयू) होने की घोषणा की।

समापन समारोह को संबोधित करते हुए राज्य के कैबिनेट मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने कहा कि वर्ष 2047 तक सौराष्ट्र और कच्छ को विकसित बनाने के लिए राज्य सरकार ने एक ठोस रोडमैप तैयार किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जब वर्ष 2003 में वाइब्रेंट गुजरात की शुरुआत की थी, तब उन्हें अनेक आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था, लेकिन उनके अचल विश्वास और विजन के कारण आज गुजरात और भारत विकास की लंबी छलांग लगा रहे हैं। उन्होंने गर्व से कहा कि इस रीजनल कॉन्फ्रेंस में हमारे प्रधानमंत्री की मौजूदगी, जिनसे दुनिया भर की प्रतिष्ठित औद्योगिक इकाइयां मिलने को आतुर होती हैं, यह दर्शाती है कि सौराष्ट्र और कच्छ का विकास उनके लिए कितना मायने रखता है।

मंत्री श्री वाघाणी ने वाइब्रेंट गुजरात की ऐतिहासिक यात्रा और सफलता के आंकड़े पेश करते हुए कहा कि वर्ष 2003 में पहले वाइब्रेंट गुजरात के दौरान केवल 66 हजार करोड़ रुपए के 80 एमओयू किए गए थे, जिसके मुकाबले आज राजकोट में आयोजित इस रीजनल कॉन्फ्रेंस में ही 5.78 लाख करोड़ रुपए के 5492 एमओयू संपन्न हुए हैं। ये आंकड़ें और अनेक देशों की सहभागिता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पर अटूट विश्वास को दिखाते हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे आयाम साकार हो रहे हैं, जिसका सीधा लाभ गुजरात के उद्योगपतियों और इकाइयों को मिल रहा है। उन्होंने कॉन्फ्रेंस के दौरान विभिन्न सेक्टरों में हुई गहरी चर्चाओं के उद्योगों के लिए मार्गदर्शक साबित होने का विश्वास व्यक्त करते हुए औद्योगिक इकाइयों और नागरिकों से अधिक से अधिक संख्या में आगामी 15 जनवरी तक चलने वाली वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एग्जीबिशन का लाभ लेने का अनुरोध किया। अंत में, उन्होंने उम्मीद व्यक्त की कि जब भारत विश्वगुरु के स्थान पर विराजेगा, तब सौराष्ट्र और कच्छ उसके मुख्य ग्रोथ इंजन के रूप में उभरेंगे।

इस अवसर पर राज्य के पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने कहा कि 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस' सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्र की क्षमता को दुनिया के समक्ष उजागर करने का एक बड़ा प्लेटफॉर्म बनी है।

विभिन्न ऐतिहासिक किस्सों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि कच्छ और सौराष्ट्र के लोगों की नस-नस में उद्यमिता भरी है। एक समय था जब सौराष्ट्र के नाविक समंदर पर राज करते थे।

उन्होंने सौराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों की औद्योगिक विशेषताओं का परिचय देते हुए कहा कि राज्य का प्रत्येक क्षेत्र किसी न किसी कौशल से भरा है और इसमें सौराष्ट्र का दबदबा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में पोरबंदर, द्वारका और सोमनाथ बेल्ट दुनिया का सबसे बड़ा पर्यटन क्षेत्र बनने जा रहा है। देश और राज्य में सेमीकंडक्टर क्षेत्र की प्रगति का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि गुजरात राज्य वर्ष 2027 में सेमीकंडक्टर क्षेत्र का हब बन जाएगा।

इस अवसर पर उन्होंने कच्छ और सौराष्ट्र के उद्योगपतियों से न्यू एज टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में निवेश करते हुए आगे बढ़ने का आह्वान किया।

उद्योग विभाग की सचिव सुश्री ममता वर्मा ने स्वागत भाषण में सौराष्ट्र–कच्छ क्षेत्र के लिए वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस को गौरवपूर्ण क्षण करार देते हुए कहा कि पिछले दो दिनों में 'स्केल और स्किल' के समन्वय के साथ उद्यमियों को एक मजबूत प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराया गया है। बीटूबी, बीटूजी, रिवर्स बायर्स-सेलर्स मीट और 50 से अधिक सेमिनारों के आयोजन से युवा पीढ़ी को भी एक नई दिशा मिली है।

इस अवसर पर उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप ने प्रेजेन्टेशन के माध्यम से वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस की सफल यात्रा की विस्तार से जानकारी दी।

मारवाड़ी यूनिवर्सिटी के संस्थापक श्री केतन मारवाड़ी ने अपने संबोधन में कहा कि वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस ने साबित कर दिया है कि भारत आज विश्व मंच पर नई ऊंचाइयों को छू रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में आयोजित कॉन्फ्रेंस में 24 देशों के प्रतिनिधियों और 4000 उद्यमियों की उपस्थिति एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य लोगों के करकमलों से 'कच्छ एंड सौराष्ट्र : एंकरिंग गुजरात्स विजन' पुस्तक का विमोचन किया गया।

इस मौके पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विभिन्न एमएसएमई के उद्योगकारों, हस्तकला कारीगरों और उद्योग विभाग का पुरस्कार के साथ सम्मान किया गया, जबकि मारवाड़ी यूनिवर्सिटी के संचालकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनका भी सम्मान किया गया।

समापन समारोह में मुख्यमंत्री के मुख्य सलाहकार श्री हसमुख अढिया, राजस्व विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री जयंती रवि, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती प्रवीणाबेन रंगाणी, विधायक सर्वश्री डॉ. दर्शिताबेन शाह, रमेशभाई टीलाळा, एलएंडटी के सीईओ श्री सिद्धार्थ गुप्ता, ज्योति सीएनसी के चेयरमैन श्री पराक्रमसिंह जाडेजा, मारवाड़ी यूनिवर्सिटी के सह-संस्थापक श्री जीतूभाई चंदाराणा, राजकोट चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री वी.पी. वैष्णव, अग्रणी उद्योगकार, व्यापार-उद्योग जगत के प्रतिनिधि और उच्च अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

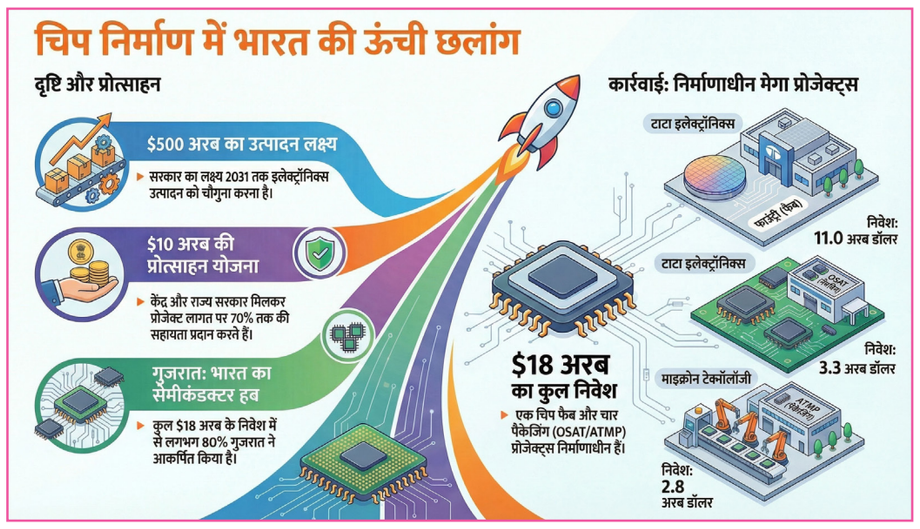

जर्मनी के स्टेट सेक्रेटरी श्री स्टिफन राउएनहोफ के नेतृत्व में जर्मन बिजनेस डेलीगेशन की मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ गांधीनगर में उच्च स्तरीय बैठक

- मुख्यमंत्री के जर्मन उद्योगों के निवेशों को अधिक सुविधापूर्ण बनाने के लिए हेल्प डेस्क शुरू करने के दिशानिर्देश
- भारत के जीडीपी ग्रोथ में गुजरात के 8 प्रतिशत से अधिक तथा महत्वपूर्ण योगदान से प्रभावित हुआ जर्मन प्रतिनिधिमंडल
- मुख्यमंत्री ने आपसी सहभागिता से ग्रोथ रेट को ऊँचाई पर ले जाने की मंशा व्यक्त की
- मुख्यमंत्री ने जर्मनी की प्रिसिजन इंजीनियरिंग तथा टेक्नोलॉजी सेक्टर की एक्सपर्टीज का लाभ गुजरात को मिलने की अपेक्षा व्यक्त की

(जीएनएस)। गांधीनगर : जर्मनी के स्टेट सेक्रेटरी श्री स्टिफन राउएनहोफ के नेतृत्व में जर्मन बिजनेस डेलीगेशन ने सोमवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की। यह डेलीगेशन भारत-जर्मन सीईओ फोरम में सहभागी होने के लिए भारत-गुजरात की यात्रा पर आया है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा जर्मन चांसलर श्री फ्रेडरिक मर्ज की उपस्थिति में आयोजित सीईओ फोरम की सफलता के लिए इस डेलीगेशन को अभिनंदन देने के साथ गुजरात में उनका स्वागत किया।

डेलीगेशन के सदस्यों ने गुजरात के देश के जीडीपी ग्रोथ में 8 प्रतिशत से अधिक का महत्वपूर्ण योगदान दिए जाने पर प्रभावित होते हुए कहा कि वे विशेषकर एसएमई सेक्टर में बिजनेस एंड इकोनॉमी संबंध बढ़ाने को उत्सुक हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में अब देश के राज्यों के ग्रोथ रेट बढ़ाने की ओर आगे बढ़ने की भूमिका दी और इस संदर्भ में कहा कि जर्मनी के उद्योगों ने गुजरात पर जो भरोसा रखा है, उसे अधिक सुदृढ़ बनाकर आपसी सहयोग से हम अधिक प्रगति कर सकेंगे।

उन्होंने इस बैठक में चर्चाओं के दौरान कहा कि प्रधानमंत्री जर्मनी के साथ विश्वसनीय मित्र के रूप में आगे बढ़ना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में गुजरात एवं जर्मनी के औद्योगिक संबंधों को अधिक गहराईपूर्वक तथा दीर्घावधि के लिए विकसित कर गुजरात में जर्मन कंपनियों के ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को अधिक वेग मिले; ऐसी हमारी मंशा है। मुख्यमंत्री ने बैठक में जर्मन उद्योगों के निवेशों को अधिक सुविधापूर्ण बनाने के लिए हेल्प डेस्क शुरू करने के दिशानिर्देश भी दिए।

जर्मन स्टेट सेक्रेटरी श्री स्टिफन राउएनहोफ ने चर्चा के दौरान कहा कि जर्मनी अपनी सप्लाई चेन डाइवर्सीफाई करना चाहता है, जिसमें गुजरात को उसकी पसंद बनाने के लिए लॉजिस्टिक्स, प्रोडक्शन स्ट्रक्चर एवं इकोनॉमिक फ्रेमवर्क में विद्यमान चुनौतियों का हल होना अपेक्षित है।

उन्होंने जोड़ा कि गुजरात एनर्जी सेक्टर में अग्रसर है। इसमें रिन्यूएबल एनर्जी ग्रिड तथा स्टोरेज की जर्मन टेक्नोलॉजी की एक्सपर्टीज का सहयोग मिल सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने विकसित भारत@2047 का जो विजन दिया है, उसमें गुजरात लीड लेने को सज्ज है। 2030 तक 100 गीगावाट रिन्यूएबल एनर्जी उत्पादन के लक्ष्य के साथ-साथ विकसित गुजरात@2047 का रोडमैप तैयार कर 6 रीजनल ग्रोथ हब तथा वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस से जिला स्तर पर फोकस सेक्टर भी तैयार किए गए हैं।

इतना ही नहीं, प्रधानमंत्री ने गुजरात को पॉलिसी ड्रिवन स्टेट के रूप में विशिष्ट पहचान दिलाई है। हाइब्रिड रिन्यूएबल एनर्जी पॉलिसी, आईटी पॉलिसी, ग्रीन हाइड्रोजन पॉलिसी आदि सेक्टर स्पेशिफिक पॉलिसीज का लाभ लेकर जर्मनी के उद्योग स्वयं के अनुकूल सेक्टर्स में गुजरात के साथ सहभागिता कर सकते हैं। श्री पटेल ने अपेक्षा व्यक्त की कि प्रिसिजन इंजीनियरिंग तथा टेक्नोलॉजी सेक्टर में जर्मनी की विशेषज्ञता का लाभ गुजरात को मिले।

इस डेलीगेशन के सदस्य तथा सीमेंस के सीईओ रोनाल्ड बुश ने भी गुजरात में एसएमई तथा अन्य उद्योग सप्लाई चेन का हिस्सा बनें या सप्लाई चेन डेवलप करने में उपयोग हो सकें; तत्संबंधी सुझाव दिए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ चर्चा में जर्मनी के विभिन्न क्षेत्रों के जो 30 से अधिक उद्योगकार-निवेशक सहभागी हुए; उनमें डॉ. कार्ल बित्जर, मैनेजिंग डाइरेक्टर, Delo industrieklebstoffe, ब्रुकनर टोकेंटेक्निक की सीईओ श्री रेजीना ब्रुकनर, वेबस्टो एसई के सीईओ श्री जोर्ग बुचहेम, टीकेएमएस एजी के एमडी श्री ओलिवर बर्कहार्ड, डॉ. वुल्फ ग्रुप के मैनेजिंग पार्टनर श्री एड्युर्ड रिचर्ड डोरेनबर्ग आदि शामिल हैं। इस डेलीगेशन के सभी सदस्यों ने गुजरात के आतिथ्य सत्कार की भी प्रशंसा की।

बैठक में मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, वित्त विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री टी. नटराजन, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, एसजीएसटी आयुक्त श्रीमती आरती कँवर तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी सहभागी हुए।

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस के तहत राजकोट में 'सौराष्ट्र इकोनॉमिक रीजन' सेमिनार में केंद्रीय मंत्री श्री पीयूष गोयल की विशेष उपस्थिति

2047 तक सौराष्ट्र की जीडीपी 600 बिलियन डॉलर पहुंच जाएगी : केंद्रीय मंत्री श्री पीयूष गोयल

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) की फलश्रुति के रूप में सोमवार को राजकोट में 'सौराष्ट्र इकोनॉमिक रीजन SaER – इकोनॉमिक मास्टर प्लान' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि राज्य स्तरीय कॉन्फ्रेंस को अब क्षेत्रीय स्तर पर ले जाना भविष्य की जरूरतों को पहचानने की प्रधानमंत्री की अनूठी क्षमता का नतीजा है। इस दृष्टिकोण से स्थानीय उद्योगों को वैश्विक प्लेटफॉर्म मिलेगा और क्षेत्रीय विकास को एक नई गति मिलेगी।

वाणिज्य मंत्री ने सौराष्ट्र के विकास के लिए तैयार किए गए 30 वर्षों के दीर्घकालिक इकोनॉमिक मास्टर प्लान की जानकारी देते हुए कहा कि क्लस्टर आधारित विकास मौजूदा समय की मांग है। इस प्लान के अंतर्गत राजकोट में इंजीनियरिंग और मेडिकल डिवाइस पार्क तथा जामनगर में पेट्रोकेमिकल्स जैसे विशिष्ट क्षेत्रों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है।

श्री गोयल ने विश्वास व्यक्त किया कि आगामी वर्षों में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा, जिसमें गुजरात की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रहेगी। विशेषकर, 2047 तक सौराष्ट्र का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 11 से 12 गुना बढ़कर 600 बिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा और गुजरात 'विकसित भारत' के संकल्प का मुख्य आधार स्तंभ बना रहेगा।

इस अवसर पर केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय में अपर सचिव श्री अजय भादू ने सौराष्ट्र के उद्यमियों से केवल 'सप्लायर' होने की सोच से आगे बढ़कर 'सिस्टम और सॉल्यूशन प्रोवाइडर' बनने का आह्वान किया। उन्होंने राजकोट के इंजीनियरिंग, मोरबी के सिरेमिक और जामनगर के एनर्जी क्लस्टर को ग्लोबल वैल्यू चेन के साथ जोड़ने पर बल दिया। उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार ग्रीन हाइड्रोजन, डिफेंस, एयरोस्पेस और प्रिसिजन मैन्युफेक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में निवेश के लिए प्लग एंड प्ले इंडस्ट्रियल क्लस्टर्स जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए कटिबद्ध है।

सेमिनार में 'गुजरात राज्य परिवर्तन संस्था z- GRIT' की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) सुश्री एस. अपर्णा ने मास्टर प्लान की रूपरेखा प्रस्तुत की, जबकि बंदरगाह और परिवहन विभाग के सचिव श्री राजेन्द्र कुमार ने सौराष्ट्र-कच्छ के बंदरगाहों और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में बड़े निवेश के अवसरों के बारे में एक प्रेजेंटेशन दिया। राजकोट चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष श्री वी.पी. वैष्णव ने भी निवेशकों को इस क्षेत्र को ग्लोबल इंडस्ट्रियल हब बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के विभिन्न तकनीकी सत्रों में देश और दुनिया के विशेषज्ञों ने रक्षा, एयरोस्पेस और एक्सपोर्ट मैनेजमेंट जैसे विषयों पर गहराई से चर्चा की। जिनमें महिंद्रा लाइफस्पेस के श्री विक्रम गोयल, JAFZA के श्री यूसुफ तांबावाला और पीडब्ल्यूसी इंजिया के श्री मोहम्मद अथर जैसे विशेषज्ञों ने अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में उद्योग जगत के अग्रणियों ने सौराष्ट्र में रक्षा, एयरोस्पेस, इंजीनियरिंग और सिरेमिक क्षेत्र में निर्यात के अवसरों तथा लॉजिस्टिक्स के नजरिये पर भी प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में सामान्य प्रशासन विभाग की सचिव (योजना) सुश्री आद्रा अग्रवाल ने सभी महानुभावों का शाब्दिक स्वागत किया और प्रासंगिक विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर ज्योति सीएनसी के श्री पराक्रमसिंह जाडेजा सहित अग्रणी उद्योगपति और निवेशक बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

वीजीआर-एग्जीबिशन में रिवर्स बायर्स-सेलर्स मीट में 500 करोड़ रुपए के निर्यात को लेकर हुई बिजनेस इंक्वायरी

अमेरिका और कनाडा सहित 23 देशों के 53 खरीदारों और 1800 से अधिक स्थानीय विक्रेताओं ने लिया हिस्सा

(जीएनएस)। राजकोट : गुजरात रीजनल एग्जीबिशन में हॉल नंबर 1 में 'रिवर्स बायर्स सेलर्स मीट' आकर्षण का केंद्र बन गई है। यहां भारत से विभिन्न मैन्युफैक्चरर्स से वस्तुएं खरीदने के लिए 23 देशों से 53 अंतरराष्ट्रीय खरीदार आए हैं। अपने उत्पाद बेचने के लिए पूरे राज्य से 1800 से अधिक मैन्युफैक्चरर्स यहां पहुंचे हैं।

फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (FIEO) के अपर महानिदेशक श्री सुविध शाह के अनुसार, इस बायर्स-सेलर्स मीट के जरिए स्थानीय उत्पादकों को अपने उत्पादन सीधे विदेश में बेचने का एक बड़ा प्लेटफॉर्म मिला है। इसके परिणामस्वरूप उन्हें बड़ा आर्थिक लाभ होने की उम्मीद है।

इस मीट का आयोजन गुजरात सरकार के इंडेक्स-बी (iNDEXTb), उद्योग आयुक्त, एमएसएमई, राइजिंग एंड एक्सेलरेटिंग एमएसएमई परफॉर्मेंस (RAMP), फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (FIEO), केमिकल एंड एप्लाइड प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (CAPEXIL), गुजरात ज्वैलरी प्रमोशन एंड एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (GJPEPC) ने मिलकर किया है।

इस मीट में हैंडलूम, हैंडीक्राफ्ट, टेक्सटाइल, एग्री फूड, टाइल्स सिरेमिक, इंजीनियरिंग, ऑटो और जेम्स एंड ज्वैलरी जैसे क्षेत्रों को केंद्र में रखा गया है। इस मीट में अमेरिका, कनाडा, यूरोप, रशिया, खाड़ी के देश, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और मध्य एशिया के देशों सहित कुल 23 देशों से 53 अंतरराष्ट्रीय खरीदार, जबकि 22 स्थानीय खरीदार आए हैं। वहीं, पूरे राज्य से 1800 से अधिक विक्रेताओं ने अपने उत्पाद बेचने के लिए उत्साह दिखाया है। खरीदारों और विक्रेताओं के बीच 2200 से अधिक बैठकें हुई हैं, और दो दिनों में 1000 से अधिक समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर हुए हैं। इसके साथ ही, लगभग 500 करोड़ रुपए के निर्यात की व्यावसायिक मांग भी आई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा जर्मनी के चांसलर श्री फ्रेडरिक मेर्ज ने गांधी आश्रम का दौरा किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मेर्ज ने सोमवार को अहमदाबाद में साबरमती नदी के तट पर स्थित ऐतिहासिक गांधी आश्रम का दौरा किया। इस अवसर पर दोनों महानुभावों ने महात्मा गांधीजी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी।

प्रधानमंत्री तथा जर्मनी के चांसलर ने आश्रम में गांधीजी के निवास स्थान हृदय कुंज का भी दौरा किया तथा चरखा कातने की प्रक्रिया को देखा। गांधी आश्रम की यात्रा के दौरान दोनों नेताओं ने गांधीजी के सादगीपूर्ण जीवन, आत्मनिर्भरता के संदेश तथा सत्य और अहिंसा के मूल्यों के प्रति गहरा सम्मान व्यक्त किया। जर्मनी के चांसलर श्री फ्रेडरिक मेर्ज गांधी आश्रम के दौरे से प्रभावित हुए।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा जर्मनी के चांसलर श्री फ्रेडरिक मेर्ज ने महात्मा गांधीजी की प्रतिमा को पुष्पांजलि अर्पित कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी
- जर्मनी के चांसलर श्री फ्रेडरिक मेर्ज गांधी आश्रम की यात्रा से प्रभावित हुए

उन्होंने विजिटर्स बुक में मेसेज देते हुए कहा कि स्वतंत्रता की शक्ति और प्रत्येक व्यक्ति के मन में महात्मा गांधी का अडिग विश्वास आज भी हमें प्रेरणा देता है। यह मानवीय विरासत भारत और जर्मनी के लोगों को मित्रता के माध्यम से एक साथ जोड़ती है। आज भी दुनिया में गांधीजी के उपदेश उतने ही प्रासंगिक हैं। गांधी आश्रम की इस यात्रा के अवसर पर राज्यपाल आचार्य देवव्रत, राज्य के मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, साबरमती आश्रम के अध्यक्ष श्री कार्तिकेय साराभाई, साबरमती आश्रम रीडेवलपमेंट कमिटी के अध्यक्ष श्री आई. पी. गौतम, अहमदाबाद जिला कलेक्टर श्री सुजीत कुमार तथा जर्मन डेलीगेशन व गांधी आश्रम से जुड़े महानुभाव उपस्थित रहे।

मिशन PSLV-C62 में आई बाधा, तकनीकी खामी के चलते 'अन्वेषा' उपग्रह कक्षा तक नहीं पहुंच सका

(जीएनएस)। श्रीहरिकोटा। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को रविवार को एक अप्रत्याशित झटका लगा, जब भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का महत्वाकांक्षी पीएसएलवी-सी62/ईओएस-एन1 मिशन अपने निर्धारित लक्ष्य को हासिल नहीं कर सका। इस मिशन के तहत प्रक्षेपित किया गया रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन का अत्याधुनिक निगरानी उपग्रह 'अन्वेषा' तकनीकी खामी के कारण अपनी निर्धारित कक्षा में स्थापित नहीं हो पाया। इसरो ने स्थिति की समीक्षा के बाद मिशन को असफल घोषित किया, जिससे वैज्ञानिक समुदाय के साथ-साथ देशभर में अंतरिक्ष प्रेमियों में भी निराशा देखी गई। रविवार सुबह 10 बजकर 18 मिनट पर आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से पीएसएलवी-सी62 रॉकेट को प्रक्षेपित किया गया था। शुरुआती कुछ मिनटों तक रॉकेट की उड़ान पूरी तरह सामान्य रही और मिशन कंट्रोल से जुड़े वैज्ञानिकों को किसी असामान्यता के संकेत नहीं मिले। पहले और दूसरे चरण में सभी प्रणालियां अपेक्षित मानकों के अनुरूप कार्य करती रहीं, जिससे यह उम्मीद बनी रही कि मिशन सफलतापूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। लेकिन उड़ान के तीसरे चरण के अंतिम हिस्से में तकनीकी गड़बड़ी सामने आई, जिसने पूरे मिशन की दिशा ही बदल दी।

इसरो द्वारा जारी जानकारी के अनुसार, तीसरे चरण में रॉकेट के संचालन के दौरान असामान्य व्यवहार दर्ज किया गया, जिसके कारण रॉकेट अपने निर्धारित पथ से विचलित हो गया। यही विचलन आगे चलकर निर्णायक साबित हुआ और पेलोड को लक्षित कक्षा में इंजेक्ट नहीं किया जा सका। वैज्ञानिकों ने मिशन के सभी डेटा का त्वरित आकलन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि उपग्रह को सुरक्षित रूप से कक्षा में स्थापित करना संभव नहीं है, जिसके चलते मिशन को औपचारिक रूप से विफल घोषित कर दिया गया।

पीएसएलवी-सी62 इसरो का 64वां पीएसएलवी मिशन था और इसके साथ ही वर्ष 2026 का पहला प्रक्षेपण भी। इस मिशन के माध्यम से कुल 16 उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने की योजना थी, जिनमें 'अन्वेषा' सबसे अहम और रणनीतिक पेलोड